قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

eParah

اِلَيْهِ يُرَدُّ

पारा - 25

اِلَيْهِ	يُرَدُّ	عِلْمُ	السَّاعَةِ ؕ	وَمَا	تَخْرُجُ	مِنْ ثَمَرٰتٍ
उसी की तरफ़	लौटाया जाता है	इल्म	क़यामत का	और नहीं	निकलता	फलों में से (कोई फल)

مِّنْ اَكْمَامِهَا	وَمَا	تَحْمِلُ	مِنْ اُنْثٰى	وَلَا	تَضَعُ	اِلَّا
अपने ग़िलाफ़ों में से	और नहीं	हामला होती	कोई मादा	और ना	वो जन्म देती है	मगर

بِعِلْمِهٖ ؕ	وَيَوْمَ	يُنَادِيْهِمْ	اَيْنَ	شُرَكَآءِيْ ۙ	قَالُوْٓا	اٰذَنّٰكَ ۙ
उसके इल्म से	और जिस दिन	वो पुकारेगा उन्हें	कहां हैं	शरीक मेरे	वो कहेंगे	अर्ज़ कर चुके हैं हम तुझसे

مَا	مِنَّا	مِنْ شَهِيْدٍ (47) ج	وَضَلَّ	عَنْهُمْ	مَّا	كَانُوْا
नहीं है	हम में से	कोई गवाह	और गुम हो जाऐंगे	उनसे	जिन्हें	थे वो

يَدْعُوْنَ	مِنْ قَبْلُ	وَظَنُّوْا	مَا	لَهُمْ	مِّنْ مَّحِيْصٍ (48)	لَا يَسْـَٔمُ
वो पुकारते	इससे पहले	और वो समझ लेंगे	नहीं है	उनके लिए	कोई जाए पनाह	नहीं उकताता

الْاِنْسَانُ	مِنْ دُعَآءِ	الْخَيْرِ ۡ	وَاِنْ	مَّسَّهُ	الشَّرُّ	فَيَئُوْسٌ
इंसान	दुआ से	भलाई की	और अगर	पहुंचता है उसे	शर	तो निहायत मायूस

قَنُوْطٌ (49)	وَلَئِنْ	اَذَقْنٰهُ	رَحْمَةً	مِّنَّا	مِنْ بَعْدِ	ضَرَّآءَ
बहुत नाउम्मीद (हो जाता है)	और अलबत्ता अगर	चखाते हैं हम उसे	कोई रहमत	अपनी तरफ़ से	बाद	तकलीफ़ के

مَسَّتْهُ	لَيَقُوْلَنَّ	هٰذَا	لِيْ ۙ	وَمَآ	اَظُنُّ	السَّاعَةَ	قَآئِمَةً ۙ
जो पहुंचती है उसे	अलबत्ता वो ज़रूर कहता है	ये	मेरे लिए है	और नहीं	मैं गुमान करता	क़यामत को	क़ायम होने वाली

وَّلَئِنْ	رُّجِعْتُ	اِلٰى رَبِّيْٓ	اِنَّ	لِيْ	عِنْدَهٗ	لَلْحُسْنٰى ج
और अलबत्ता अगर	लौटाया गया मैं	तरफ़ अपने रब के	यक़ीनन	मेरे लिए	उसके पास	अलबत्ता भलाई है

فَلَنُنَبِّئَنَّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	بِمَا	عَمِلُوْا ۡ	وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ
पस अलबत्ता हम ज़रूर ख़बर देंगे	उन्हें जिन्होंने	कुफ़्र किया	उसकी जो	उन्होंने अमल किए	और अलबत्ता हम ज़रूर चखाऐंगे उन्हें

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَعْرَضَ	عَلَى الْاِنْسَانِ	اَنْعَمْنَا	وَاِذَآ	مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿50﴾
वो ऐराज़ करता है	इंसान पर	इनआम करते हैं हम	और जब	सख़्त अज़ाब में से

عَرِيْضٍ ﴿51﴾	فَذُوْ دُعَآءٍ	الشَّرُّ	مَسَّهُ	وَاِذَا	بِجَانِبِهٖ ج	وَنَا
लम्बी-चौड़ी	तो दुआ करने वाला हो जाता है	तकलीफ़	पहुंचती है उसे	और जब	पहलू अपना	और वो फेर लेता है

كَفَرْتُمْ	ثُمَّ	مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ	كَانَ	اِنْ	اَرَءَيْتُمْ	قُلْ
कुफ़्र किया तुम ने	फिर	अल्लाह की तरफ़ से	है वो	अगर	क्या ग़ौर किया तुम ने	कह दीजिए

بَعِيْدٍ ﴿52﴾	فِيْ شِقَاقٍ	هُوَ	مِمَّنْ	اَضَلُّ	مَنْ	بِهٖ
बहुत दूर की	मुख़ालिफ़त में है	वो	उससे जो	ज़्यादा भटका हुआ है	कौन	उसका

يَتَبَيَّنَ	حَتّٰى	وَفِيْٓ اَنْفُسِهِمْ	فِي الْاٰفَاقِ	اٰيٰتِنَا	سَنُرِيْهِمْ
वाज़ेह हो जाएगा	यहां तक कि	और उनके नफ़्सों में	आफ़ाक़/अतराफ़ में	निशानियां अपनी	अनक़रीब हम दिखाऐंगे उन्हें

عَلٰى	اَنَّهٗ	بِرَبِّكَ	يَكْفِ	اَوَلَمْ	الْحَقُّ ط	اَنَّهُ	لَهُمْ
ऊपर	कि बेशक वो	आपका रब (उस पर)	काफ़ी	क्या भला नहीं	हक़ है	कि बेशक वो	उनके लिए

مِّنْ لِّقَآءِ	فِيْ مِرْيَةٍ	اِنَّهُمْ	اَلَآ	شَهِيْدٌ ﴿53﴾	شَيْءٍ	كُلِّ
मुलाक़ात से	शक में हैं	बेशक वो	ख़बरदार	ख़ूब गवाह है	चीज़ के	हर

ع 6 10 1

مُّحِيْطٌ ﴿54﴾ ع	شَيْءٍ	بِكُلِّ	اِنَّهٗ	اَلَآ	رَبِّهِمْ ط
अहाता करने वाला है	चीज़ का	हर	बेशक वो	ख़बरदार	अपने रब की

رُكُوْعَاتُهَا: 5 — 62 سُوْرَةُ الشُّوْرٰى مَكِّيَّةٌ 42 — اٰيَاتُهَا: 53

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الَّذِيْنَ	وَاِلَى	اِلَيْكَ	يُوْحِيْٓ	كَذٰلِكَ	عٓسٓقٓ ﴿2﴾	حٰمٓ ﴿1﴾ ج
उनके जो	और तरफ़	तरफ़ आपके	वही करता है	इसी तरह	عٓسٓقٓ	حٰمٓ

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنْ قَبْلِكَ ۙ	اللّٰهُ	الْعَزِيْزُ	الْحَكِيْمُ ③	لَهٗ	مَا	فِي السَّمٰوٰتِ
आपसे पहले थे	अल्लाह	जो बड़ा ज़बरदस्त है	ख़ूब हिक्मत वाला है	उसी के लिए है	जो	आसमानों में है
وَمَا	فِي الْاَرْضِ ؕ	وَهُوَ	الْعَلِيُّ	الْعَظِيْمُ ④	تَكَادُ	السَّمٰوٰتُ
और जो	ज़मीन में है	और वो	बहुत बुलंद है	बहुत बड़ा है	क़रीब है कि	आसमान
يَتَفَطَّرْنَ	مِنْ فَوْقِهِنَّ	وَالْمَلٰٓئِكَةُ	يُسَبِّحُوْنَ	بِحَمْدِ	رَبِّهِمْ	
वो फट पड़ें	अपने ऊपर से	और फ़रिश्ते	वो तस्बीह करते हैं	साथ तारीफ़ के	अपने रब की	
وَيَسْتَغْفِرُوْنَ	لِمَنْ	فِي الْاَرْضِ ؕ	اَلَآ	اِنَّ	اللّٰهَ	هُوَ
और वो बख़्शिश मांगते हैं	उनके लिए जो	ज़मीन में हैं	ख़बरदार	बेशक	अल्लाह	वो ही है
الْغَفُوْرُ	الرَّحِيْمُ ⑤	وَالَّذِيْنَ	اتَّخَذُوْا	مِنْ دُوْنِهٖٓ	اَوْلِيَآءَ	اللّٰهُ
बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला	और वो जिन्होंने	बना लिए	उसके सिवा	हिमायती/दोस्त	अल्लाह
حَفِيْظٌ	عَلَيْهِمْ ۖ	وَمَآ	اَنْتَ	عَلَيْهِمْ	بِوَكِيْلٍ ⑥	وَكَذٰلِكَ
ख़ूब निगहबान है	उन पर	और नहीं	आप	उन पर	कोई ज़िम्मेदार	और इसी तरह
اَوْحَيْنَآ	اِلَيْكَ	قُرْاٰنًا	عَرَبِيًّا	لِّتُنْذِرَ	اُمَّ الْقُرٰى	وَمَنْ
वही किया हमने	तरफ़ आपके	कुरआन	अरबी	ताकि आप डराएं	मक्का वालों को	और उनको जो
حَوْلَهَا	وَتُنْذِرَ	يَوْمَ الْجَمْعِ	لَا رَيْبَ	فِيْهِ ؕ	فَرِيْقٌ	فِي الْجَنَّةِ
इर्द-गिर्द हैं उसके	और आप डराएं	जमा होने के दिन से	नहीं कोई शक	इसमें	एक गिरोह (होगा)	जन्नत में
وَفَرِيْقٌ	فِي السَّعِيْرِ ⑦	وَلَوْ	شَآءَ	اللّٰهُ	لَجَعَلَهُمْ	اُمَّةً
और एक गिरोह (होगा)	दोज़ख़ में	और अगर	चाहता	अल्लाह	अलबत्ता वो बना देता उन्हें	उम्मत
وَّاحِدَةً	وَّلٰكِنْ	يُّدْخِلُ	مَنْ	يَّشَآءُ	فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ	وَالظّٰلِمُوْنَ
एक ही	और लेकिन	वो दाख़िल करता है	जिसे	वो चाहता है	अपनी रहमत में	और जो ज़ालिम हैं

©AL-FURQAN INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مَا	لَهُمْ	مِّنْ وَّلِيٍّ	وَّلَا	نَصِيْرٍ ⑧	اَمِ	اتَّخَذُوْا	مِنْ دُوْنِهٖٓ
नहीं	उनके लिए	कोई दोस्त	और ना	कोई मददगार	या	उन्होंने बना रखे हैं	उसके सिवा

اَوْلِيَآءَ ج	فَاللّٰهُ	هُوَ	الْوَلِيُّ	وَهُوَ	يُحْيِ	الْمَوْتٰى ز	وَهُوَ	عَلٰى
कारसाज़	पस अल्लाह	वो ही है	कारसाज़	और वो	वो ज़िंदा करेगा	मुर्दों को	और वो	ऊपर

ع 1 9 2

كُلِّ	شَيْءٍ	قَدِيْرٌ ⑨ ع	وَمَا	اخْتَلَفْتُمْ	فِيْهِ	مِنْ شَيْءٍ	فَحُكْمُهٗٓ
हर	चीज़ के	ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है	और जो भी	इख़्तिलाफ़ किया तुमने	उसमें	किसी चीज़ से	तो फ़ैसला उसका

اِلَى اللّٰهِ ط	ذٰلِكُمُ	اللّٰهُ	رَبِّيْ	عَلَيْهِ	تَوَكَّلْتُ قلے	وَاِلَيْهِ
तरफ़ अल्लाह के है	ये है	अल्लाह	रब मेरा	इसी पर	तवक्कल किया मैंने	और इसी की तरफ़

اُنِيْبُ ⑩	فَاطِرُ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ط	جَعَلَ	لَكُمْ	مِّنْ اَنْفُسِكُمْ
मैं रुजूअ करता हूं	पैदा करने वाला	आसमानों	और ज़मीन का	उसने बनाए	तुम्हारे लिए	तुम्हारे नफ़्सों से

اَزْوَاجًا	وَّمِنَ الْاَنْعَامِ	اَزْوَاجًا ج	يَذْرَؤُكُمْ	فِيْهِ ط	لَيْسَ
जोड़े	और मवेशियों से	जोड़े	वो फैलाता है तुम्हें	इसमें	नहीं है

كَمِثْلِهٖ	شَيْءٌ ج	وَهُوَ	السَّمِيْعُ	الْبَصِيْرُ ⑪	لَهٗ	مَقَالِيْدُ
उसकी मानिंद	कोई चीज़	और वो	ख़ूब सुनने वाला है	ख़ूब देखने वाला है	उसी के लिए हैं	कुंजियां

السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ج	يَبْسُطُ	الرِّزْقَ	لِمَنْ	يَّشَآءُ	وَيَقْدِرُ ط
आसमानों	और ज़मीन की	वो फैलाता है	रिज़्क़	जिसके लिए	वो चाहता है	और वो तंग कर देता है

اِنَّهٗ	بِكُلِّ	شَيْءٍ	عَلِيْمٌ ⑫	شَرَعَ	لَكُمْ	مِّنَ الدِّيْنِ
बेशक वो	हर	चीज़ को	ख़ूब जानने वाला है	उसने मुक़र्रर किया	तुम्हारे लिए	दीन में से

مَا	وَصّٰى	بِهٖ	نُوْحًا	وَّالَّذِيْٓ	اَوْحَيْنَآ	اِلَيْكَ	وَمَا
वो जो	उसने वसीयत की	उसकी	नूह को	और वो जो	वही की हमने	तरफ़ आपके	और वो जो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَصَّيْنَا	بِهٖٓ	اِبْرٰهِيْمَ	وَمُوْسٰى	وَعِيْسٰٓى	اَنْ	اَقِيْمُوا	الدِّيْنَ
वसीयत की हमने	उसकी	इब्राहीम	और मूसा	और ईसा को	कि	क़ायम करो	दीन को

وَلَا	تَتَفَرَّقُوْا	فِيْهِ ؕ	كَبُرَ	عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ	مَا	تَدْعُوْهُمْ
और ना	तुम तफ़रक़ा डालो	इसमें	बड़ा (भारी) है	मुशरिकों पर	जो	तुम बुलाते हो उन्हें

اِلَيْهِ ؕ	اَللّٰهُ	يَجْتَبِيْٓ	اِلَيْهِ	مَنْ	يَّشَآءُ	وَيَهْدِيْٓ	اِلَيْهِ
तरफ़ उसके	अल्लाह	वो चुन लेता है	अपनी तरफ़	जिसे	वो चाहता है	और वो हिदायत देता है	अपनी तरफ़

مَنْ	يُّنِيْبُ ⑬	وَمَا	تَفَرَّقُوْٓا	اِلَّا	مِنْۢ بَعْدِ	مَا	جَآءَهُمُ
उसे जो	रुजूअ करता है	और नहीं	उन्होंने तफ़रक़ा डाला	मगर	बाद इसके	जो	आ गया उनके पास

الْعِلْمُ	بَغْيًۢا	بَيْنَهُمْ ؕ	وَلَوْلَا	كَلِمَةٌ	سَبَقَتْ	مِنْ رَّبِّكَ
इल्म	सरकशी की वजह से	आपस में	अगर ना होती	एक बात	जो पहले गुज़र चुकी	आपके रब की तरफ़ से

اِلٰٓى اَجَلٍ	مُّسَمًّى	لَّقُضِيَ	بَيْنَهُمْ ؕ	وَاِنَّ	الَّذِيْنَ	اُوْرِثُوا
एक वक़्त तक	मुक़र्रर	अलबत्ता फ़ैसला कर दिया जाता	दर्मियान उनके	और बेशक	वो लोग जो	वारिस बनाए गए

الْكِتٰبَ	مِنْۢ بَعْدِهِمْ	لَفِيْ شَكٍّ	مِّنْهُ	مُرِيْبٍ ⑭	فَلِذٰلِكَ
किताब के	उनके बाद	अलबत्ता शक में हैं	उसकी तरफ़ से	जो बेचैन करने वाला है	तो उसी (दीन) के लिए

فَادْعُ ۚ	وَاسْتَقِمْ	كَمَآ	اُمِرْتَ ۚ	وَلَا	تَتَّبِعْ	اَهْوَآءَهُمْ ۚ
पस दावत दीजिए	और क़ायम रहिए	जैसा कि	हुक्म दिए गए आप	और ना	आप पैरवी कीजिए	उनकी ख़्वाहिशात की

وَقُلْ	اٰمَنْتُ	بِمَآ	اَنْزَلَ	اللّٰهُ	مِنْ كِتٰبٍ ۚ	وَاُمِرْتُ
और कह दीजिए	ईमान लाया मैं	उस पर जो	नाज़िल किया	अल्लाह ने	किताब से	और हुक्म दिया गया है मुझे

لِاَعْدِلَ	بَيْنَكُمْ ؕ	اَللّٰهُ	رَبُّنَا	وَرَبُّكُمْ ؕ	لَنَآ	اَعْمَالُنَا
कि मैं अदल करूं	दर्मियान तुम्हारे	अल्लाह ही	रब है हमारा	और रब तुम्हारा	हमारे लिए	आमाल हमारे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَلَكُمْ	اَعْمَالُكُمْ ط	لَا حُجَّةَ	بَيْنَنَا	وَبَيْنَكُمْ ط	اَللّٰهُ	يَجْمَعُ
और तुम्हारे लिए	आमाल तुम्हारे	नहीं कोई झगड़ा	दर्मियान हमारे	और दर्मियान तुम्हारे	अल्लाह	वो जमा कर देगा

بَيْنَنَا ج	وَاِلَيْهِ	الْمَصِيْرُ ⑮ ط	وَالَّذِيْنَ	يُحَآجُّوْنَ	فِي اللّٰهِ	مِنْ بَعْدِ
हमें आपस में	और तरफ़ उसी के	लौटना है	और वो जो	झगड़ते हैं	अल्लाह के बारे में	बाद इसके

مَا	اسْتُجِيْبَ	لَهٗ	حُجَّتُهُمْ	دَاحِضَةٌ	عِنْدَ	رَبِّهِمْ	وَعَلَيْهِمْ
जो	क़ुबूल कर लिया गया	उसके लिए	हुज्जत/दलील उनकी	ज़ाइल होने वाली है	नज़दीक	उनके रब के	और उन पर

غَضَبٌ	وَّلَهُمْ	عَذَابٌ	شَدِيْدٌ ⑯	اَللّٰهُ	الَّذِيْٓ	اَنْزَلَ	الْكِتٰبَ
ग़ज़ब है	और उनके लिए	अज़ाब है	सख़्त	अल्लाह	वो है जिसने	नाज़िल किया	किताब को

بِالْحَقِّ	وَالْمِيْزَانَ ط	وَمَا	يُدْرِيْكَ	لَعَلَّ	السَّاعَةَ	قَرِيْبٌ ⑰
साथ हक़ के	और मीज़ान को	और क्या चीज़	बताए आपको	शायद कि	क़यामत	क़रीब हो

يَسْتَعْجِلُ	بِهَا	الَّذِيْنَ	لَا يُؤْمِنُوْنَ	بِهَا ج	وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا
जल्दी मांगते हैं	उसे	वो जो	नहीं वो ईमान लाते	इस पर	और वो जो	ईमान लाए हैं

مُشْفِقُوْنَ	مِنْهَا لا	وَيَعْلَمُوْنَ	اَنَّهَا	الْحَقُّ ط	اَلَآ	اِنَّ	الَّذِيْنَ
डरने वाले हैं	उससे	और वो इल्म रखते हैं	कि बेशक वो	हक़ है	ख़बरदार	बेशक	वो जो

يُمَارُوْنَ	فِي السَّاعَةِ	لَفِيْ ضَلٰلٍ	بَعِيْدٍ ⑱	اَللّٰهُ	لَطِيْفٌ	بِعِبَادِهٖ
झगड़ते हैं	क़यामत के बारे में	अलबता गुमराही में हैं	दूर की	अल्लाह	बहुत मेहरबान है	अपने बंदों पर

ع 2 10 3

يَرْزُقُ	مَنْ	يَّشَآءُ ج	وَهُوَ	الْقَوِيُّ	الْعَزِيْزُ ⑲ ع	مَنْ	كَانَ
वो रिज़्क़ देता है	जिसे	वो चाहता है	और वो	बहुत कुव्वत वाला है	ख़ूब ग़लबे वाला है	जो कोई	है

يُرِيْدُ	حَرْثَ	الْاٰخِرَةِ	نَزِدْ	لَهٗ	فِيْ حَرْثِهٖ ج	وَمَنْ	كَانَ
चाहता	खेती	आख़िरत की	हम ज़्यादा कर देंगे	उसके लिए	उसकी खेती में	और जो कोई	है

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يُرِيْدُ	حَرْثَ	الدُّنْيَا	نُؤْتِهٖ	مِنْهَا	وَمَا	لَهٗ	فِي الْاٰخِرَةِ
चाहता	खेती	दुनिया की	हम देते हैं उसे	उसमें से	और नहीं होगा	उसके लिए	आख़िरत में

مِنْ نَّصِيْبٍ (20)	اَمْ	لَهُمْ	شُرَكٰٓؤُا	شَرَعُوْا	لَهُمْ
कोई हिस्सा	या	उनके लिए	कुछ शरीक हैं	उन्होंने मुक़र्रर कर दिया	उनके लिए

مِّنَ الدِّيْنِ	مَا	لَمْ	يَاْذَنْۢ	بِهِ	اللّٰهُ ؕ	وَلَوْلَا	كَلِمَةُ
दीन में से	वो जो	नहीं	इजाज़त दी	उसकी	अल्लाह ने	और अगर ना होती	बात

الْفَصْلِ	لَقُضِيَ	بَيْنَهُمْ ؕ	وَاِنَّ	الظّٰلِمِيْنَ	لَهُمْ	عَذَابٌ
फ़ैसले की	अलबत्ता फ़ैसला कर दिया जाता	दर्मियान उनके	और बेशक	ज़ालिम लोग	उनके लिए	अज़ाब है

اَلِيْمٌ (21)	تَرَى	الظّٰلِمِيْنَ	مُشْفِقِيْنَ	مِمَّا	كَسَبُوْا	وَهُوَ
दर्दनाक	आप देखेंगे	ज़ालिमों को	डरने वाले होंगे	उससे जो	उन्होंने कमाई की	और वो

وَاقِعٌۢ	بِهِمْ ؕ	وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	فِيْ رَوْضٰتِ
वाक़ेअ होने वाला है	उन पर	और वो जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	बाग़ों में होंगे

الْجَنّٰتِ ۚ	لَهُمْ	مَّا	يَشَآءُوْنَ	عِنْدَ	رَبِّهِمْ ؕ	ذٰلِكَ	هُوَ
जन्नतों के	उनके लिए होगा	जो	वो चाहेंगे	पास	उनके रब के	यही	वो

الْفَضْلُ	الْكَبِيْرُ (22)	ذٰلِكَ	الَّذِيْ	يُبَشِّرُ	اللّٰهُ	عِبَادَهُ
फ़ज़्ल है	बहुत बड़ा	ये वो ही है	जिसकी	ख़ुशख़बरी देता है	अल्लाह	अपने बंदों को

الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ ؕ	قُلْ	لَّآ	اَسْـَٔلُكُمْ	عَلَيْهِ
वो जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	कह दीजिए	नहीं	मैं मांगता तुम से	इस पर

اَجْرًا	اِلَّا	الْمَوَدَّةَ	فِي الْقُرْبٰى ؕ	وَمَنْ	يَّقْتَرِفْ	حَسَنَةً
कोई अजर	सिवाए	मोहब्बत के	क़राबतदारी में	और जो कोई	कमाएगा	कोई नेकी

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

نَّزِدْ	لَهٗ	فِيْهَا	حُسْنًا ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	غَفُوْرٌ	شَكُوْرٌ (23)
हम ज़्यादा कर देंगे	उसके लिए	उसमें	ख़ूबी को	बेशक	अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला	ख़ूब क़द्रदान है

اَمْ	يَقُوْلُوْنَ	افْتَرٰى	عَلَى اللّٰهِ	كَذِبًا ۚ	فَاِنْ	يَّشَاِ	اللّٰهُ
या	वो कहते है	उसने गढ़ लिया	अल्लाह पर	झूठ	फिर अगर	चाहता	अल्लाह

يَخْتِمْ	عَلٰى قَلْبِكَ ؕ	وَيَمْحُ	اللّٰهُ	الْبَاطِلَ	وَيُحِقُّ	الْحَقَّ
वो मोहर लगा देता	आपके दिल पर	और जल्द मिटा देता है	अल्लाह	बातिल को	और वो हक़ कर दिखाता है	हक़ को

بِكَلِمٰتِهٖ ؕ	اِنَّهٗ	عَلِيْمٌۢ	بِذَاتِ الصُّدُوْرِ (24)	وَهُوَ	الَّذِيْ
अपने कलिमात से	बेशक वो	ख़ूब जानने वाला है	सीनों वाले (भेद)	और वो ही है	जो

يَقْبَلُ	التَّوْبَةَ	عَنْ عِبَادِهٖ	وَيَعْفُوْا	عَنِ السَّيِّاٰتِ	وَيَعْلَمُ
क़ुबूल करता है	तौबा	अपने बंदों से	और वो दरगुज़र करता है	बुराईयों से	और वो जानता है

مَا	تَفْعَلُوْنَ (25) ۙ	وَيَسْتَجِيْبُ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ
जो	तुम करते हो	और वो (दुआ) क़ुबूल करता है	उनकी जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक

وَيَزِيْدُهُمْ	مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ	وَالْكٰفِرُوْنَ	لَهُمْ	عَذَابٌ	شَدِيْدٌ (26)
और वो ज़्यादा देता है उन्हें	अपने फ़ज़्ल से	और जो काफ़िर हैं	उनके लिए	अज़ाब है	शदीद

وَلَوْ	بَسَطَ	اللّٰهُ	الرِّزْقَ	لِعِبَادِهٖ	لَبَغَوْا	فِي الْاَرْضِ	وَلٰكِنْ
और अगर	खोल दे	अल्लाह	रिज़्क़	अपने बंदों के लिए	अलबत्ता वो सरकशी करें	ज़मीन में	और लेकिन

يُنَزِّلُ	بِقَدَرٍ	مَّا	يَشَآءُ ؕ	اِنَّهٗ	بِعِبَادِهٖ	خَبِيْرٌۢ	بَصِيْرٌ (27)
वो उतारता है	साथ एक अंदाज़े के	जो	वो चाहता है	बेशक वो	अपने बंदों से	ख़ूब बाख़बर है	ख़ूब देखने वाला है

وَهُوَ	الَّذِيْ	يُنَزِّلُ	الْغَيْثَ	مِنْۢ بَعْدِ	مَا	قَنَطُوْا	وَيَنْشُرُ
और वो ही है	जो	उतारता है	बारिश को	इसके बाद	जो	वो मायूस हो गए	और वो फैला देता है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

السَّمٰوٰتِ	خَلْقُ	وَمِنْ اٰيٰتِهٖ	الْحَمِيْدُ (28)	الْوَلِيُّ	وَهُوَ	رَحْمَتَهٗ ط
आसमानों की	पैदाइश	और उसकी निशानियों में से है	बहुत तारीफ़ वाला है	मददगार है	और वो ही	अपनी रहमत को

عَلٰى جَمْعِهِمْ	وَهُوَ	مِنْ دَآبَّةٍ ط	فِيْهِمَا	بَثَّ	وَمَا	وَالْاَرْضِ
उनके जमा करने पर	और वो	कोई जानदार	इन दोनों में	उसने फैला दिए	और जो भी	और ज़मीन की

ع 3 10 4

فَبِمَا	مِّنْ مُّصِيْبَةٍ	اَصَابَكُمْ	وَمَآ	قَدِيْرٌ (29) ع	يَشَآءُ	اِذَا
पस बवजह उसके जो	कोई मुसीबत	पहुंची तुम्हें	और जो भी	ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है	वो चाहे	जब

اَنْتُمْ	وَمَآ	عَنْ كَثِيْرٍ (30) ط	وَيَعْفُوْا	اَيْدِيْكُمْ	كَسَبَتْ
तुम	और नहीं	बहुत कुछ से	और वो दरगुज़र करता है	तुम्हारे हाथों ने	कमाई की

مِنْ وَّلِيٍّ	اللّٰهِ	مِّنْ دُوْنِ	لَكُمْ	وَمَا	فِي الْاَرْضِ ج	بِمُعْجِزِيْنَ
कोई दोस्त	अल्लाह के	सिवाए	तुम्हारे लिए	और नहीं	ज़मीन में	आजिज़ करने वाले

كَالْاَعْلَامِ (32) ط	فِي الْبَحْرِ	الْجَوَارِ	وَمِنْ اٰيٰتِهِ	نَصِيْرٍ (31)	وَّلَا
पहाड़ों की तरह	समुन्दर में	कश्तियाँ	और उसकी निशानियों में से हैं	कोई मददगार	और ना

اِنَّ	عَلٰى ظَهْرِهٖ ط	رَوَاكِدَ	فَيَظْلَلْنَ	الرِّيْحَ	يُسْكِنِ	يَّشَاْ	اِنْ
यक़ीनन	उसकी पुश्त पर	खड़ी हुई	तो वो रह जाएं	हवा को	वो साकिन कर दे	वो चाहे	अगर

يُوْبِقْهُنَّ	اَوْ	شَكُوْرٍ (33) لا	صَبَّارٍ	لِّكُلِّ	لَاٰيٰتٍ	فِيْ ذٰلِكَ
वो हलाक कर दे उन्हें	या	बहुत शुक्र गुज़ार के	बहुत सब्र करने वाले	वास्ते हर	अलबत्ता निशानियां हैं	इसमें

الَّذِيْنَ	وَّيَعْلَمَ	عَنْ كَثِيْرٍ (34) ن	وَيَعْفُ	كَسَبُوْا	بِمَا
वो लोग जो	और (ताकि) जान लें	बहुत सों से	और वो दरगुज़र कर दे	उन्होंने कमाई की	बवजह उसके जो

اُوْتِيْتُمْ	فَمَآ	مِّنْ مَّحِيْصٍ (35)	لَهُمْ	مَا	فِيْٓ اٰيٰتِنَا ط	يُجَادِلُوْنَ
दिए गए हो तुम	पस जो भी	कोई जाए पनाह	उनके लिए	नहीं	हमारी आयात में	झगड़ते हैं

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِّنْ شَيْءٍ	فَمَتَاعُ	الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا ج	وَمَا	عِنْدَ	اللّٰهِ	خَيْرٌ
कोई चीज़	तो सामान है	ज़िन्दगी का	दुनिया की	और जो	पास है	अल्लाह के	बेहतर है

وَّاَبْقٰى	لِلَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَلٰى رَبِّهِمْ	يَتَوَكَّلُوْنَ (36) ج	وَالَّذِيْنَ
और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला है	उनके लिए जो	ईमान लाए	और अपने रब पर ही	वो तवक्कल करते हैं	और वो जो

يَجْتَنِبُوْنَ	كَبٰٓئِرَ	الْاِثْمِ	وَالْفَوَاحِشَ	وَاِذَا مَا	غَضِبُوْا
इज्तिनाब करते हैं	कबीरा	गुनाहों से	और बेहयाई के कामों से	और जब भी	वो ग़ज़बनाक होते हैं

هُمْ	يَغْفِرُوْنَ (37) ج	وَالَّذِيْنَ	اسْتَجَابُوْا	لِرَبِّهِمْ	وَاَقَامُوا	الصَّلٰوةَ ص
वो	वो माफ़ कर देते हैं	और वो जिन्होंने	लब्बैक कही	अपने रब के लिए	और उन्होंने क़ायम की	नमाज़

وَاَمْرُهُمْ	شُوْرٰى	بَيْنَهُمْ ص	وَمِمَّا	رَزَقْنٰهُمْ	يُنْفِقُوْنَ (38) ج
और काम उनका	मशवरा करना है	आपस में	और उसमें से जो	रिज़्क़ दिया हमने उन्हें	वो ख़र्च करते हैं

وَالَّذِيْنَ	اِذَآ	اَصَابَهُمُ	الْبَغْيُ	هُمْ	يَنْتَصِرُوْنَ (39)	وَجَزٰٓؤُا
और वो जो	जब	पहुँचती है उन्हें	कोई ज़्यादती	वो	बदला लेते हैं	और बदला

سَيِّئَةٍ	سَيِّئَةٌ	مِّثْلُهَا ج	فَمَنْ	عَفَا	وَاَصْلَحَ	فَاَجْرُهٗ
बुराई का	बुराई है	उसकी मिसल	पस जो कोई	माफ़ कर दे	और वो इस्लाह करे	तो अजर उसका

عَلَى اللّٰهِ ط	اِنَّهٗ	لَا يُحِبُّ	الظّٰلِمِيْنَ (40)	وَلَمَنِ	انْتَصَرَ	بَعْدَ
ज़िम्मे है अल्लाह के	बेशक वो	नहीं वो मोहब्बत करता	ज़ालिमों से	और अलबत्ता जो कोई	बदला ले	बाद

ظُلْمِهٖ	فَاُولٰٓئِكَ	مَا	عَلَيْهِمْ	مِّنْ سَبِيْلٍ (41) ط	اِنَّمَا	السَّبِيْلُ
अपने (ऊपर) ज़ुल्म के	तो यही लोग हैं	नहीं	उन पर	कोई मुआख़िज़ा	बेशक	मुआख़िज़ा तो

عَلَى الَّذِيْنَ	يَظْلِمُوْنَ	النَّاسَ	وَيَبْغُوْنَ	فِى الْاَرْضِ	بِغَيْرِ	الْحَقِّ ط
उन पर है जो	ज़ुल्म करते हैं	लोगों पर	और वो बग़ावत करते हैं	ज़मीन में	बग़ैर	हक़ के

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اُولٰٓئِكَ	لَهُمْ	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ (42)	وَلَمَنْ	صَبَرَ	وَغَفَرَ	اِنَّ
यही लोग हैं	उनके लिए	अज़ाब है	दर्दनाक	और अलबत्ता जिसने	सब्र किया	और उसने माफ़ कर दिया	बेशक

ذٰلِكَ	لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ (43) ع	وَمَنْ	يُّضْلِلِ	اللّٰهُ	فَمَا	لَهٗ
ये	अलबत्ता हिम्मत के कामों से है	और जिसे	भटका दे	अल्लाह	तो नहीं	उसके लिए

ع 4 14 5

مِنْ وَّلِيٍّ	مِّنْۢ بَعْدِهٖ ط	وَتَرَى	الظّٰلِمِيْنَ	لَمَّا	رَاَوُا	الْعَذَابَ
कोई कारसाज़	इसके बाद	और आप देखेंगे	ज़ालिमों को	जब	वो देख लेंगे	अज़ाब

يَقُوْلُوْنَ	هَلْ	اِلٰى مَرَدٍّ	مِّنْ سَبِيْلٍ (44) ج	وَتَرٰىهُمْ	يُعْرَضُوْنَ
वो कहेंगे	क्या है	वापस लौटने की तरफ़	कोई रास्ता	और आप देखेंगे उन्हें	वो पेश किए जाएंगे

عَلَيْهَا	خٰشِعِيْنَ	مِنَ الذُّلِّ	يَنْظُرُوْنَ	مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ط	وَقَالَ
उस पर	झुके हुए	ज़िल्लत की वजह से	वो देखेंगे	छुपी आंख/कनअंखियों से	और कहेंगे

الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	اِنَّ	الْخٰسِرِيْنَ	الَّذِيْنَ	خَسِرُوْٓا	اَنْفُسَهُمْ
वो लोग जो	ईमान लाए	बेशक	ख़सारा पाने वाले	वो हैं जिन्होंने	ख़सारे में डाला	अपने नफ़्सों को

وَاَهْلِيْهِمْ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ ط	اَلَآ	اِنَّ	الظّٰلِمِيْنَ	فِيْ عَذَابٍ
और अपने घर वालों को	दिन	क़यामत के	ख़बरदार	बेशक	ज़ालिम लोग	अज़ाब में होंगे

مُّقِيْمٍ (45)	وَمَا	كَانَ	لَهُمْ	مِّنْ اَوْلِيَآءَ	يَنْصُرُوْنَهُمْ	مِّنْ دُوْنِ
मुक़ीम/दाइमी	और ना	होंगे	उनके लिए	कोई मददगार	जो मदद करें उनकी	सिवाए

اللّٰهِ ط	وَمَنْ	يُّضْلِلِ	اللّٰهُ	فَمَا	لَهٗ	مِنْ سَبِيْلٍ (46) ط	اِسْتَجِيْبُوْا
अल्लाह के	और जिसे	भटका दे	अल्लाह	तो नहीं	उसके लिए	कोई रास्ता	लब्बैक कहो

لِرَبِّكُمْ	مِّنْ قَبْلِ	اَنْ	يَّاْتِيَ	يَوْمٌ	لَّا مَرَدَّ	لَهٗ	مِنَ اللّٰهِ ط
अपने रब के लिए	इससे पहले	कि	आ जाए	एक दिन	नहीं टलना	उसके लिए	अल्लाह की तरफ़ से

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مَا	لَكُمْ	مِّنْ مَّلْجَاٍ	يَّوْمَئِذٍ	وَّمَا	لَكُمْ	مِّنْ نَّكِيْرٍ (47)
नहीं	तुम्हारे लिए	कोई जाए पनाह	उस दिन	और नहीं	तुम्हारे लिए	कोई इंकार करना

فَاِنْ	اَعْرَضُوْا	فَمَآ	اَرْسَلْنٰكَ	عَلَيْهِمْ	حَفِيْظًا ؕ	اِنْ	عَلَيْكَ
फिर अगर	वो ऐराज़ करें	तो नहीं	भेजा हमने आपको	उन पर	निगहबान बनाकर	नहीं	आपके ज़िम्मे

اِلَّا	الْبَلٰغُ ؕ	وَاِنَّآ	اِذَآ	اَذَقْنَا	الْاِنْسَانَ	مِنَّا	رَحْمَةً
मगर	पहुंचा देना	और बेशक हम	जब	चखाते हैं हम	इंसान को	अपनी तरफ़ से	कोई रहमत

فَرِحَ	بِهَا ۚ	وَاِنْ	تُصِبْهُمْ	سَيِّئَةٌۢ	بِمَا	قَدَّمَتْ
वो ख़ुश हो जाता है	उस पर	और अगर	पहुंचती है उन्हें	कोई तकलीफ़	बवजह उसके जो	आगे भेजा

اَيْدِيْهِمْ	فَاِنَّ	الْاِنْسَانَ	كَفُوْرٌ (48)	لِلّٰهِ	مُلْكُ	السَّمٰوٰتِ
उनके हाथों ने	तो बेशक	इंसान	सख़्त नाशुक्रा है	अल्लाह ही के लिए है	बादशाहत	आसमानों

وَالْاَرْضِ ؕ	يَخْلُقُ	مَا	يَشَآءُ ؕ	يَهَبُ	لِمَنْ	يَّشَآءُ	اِنَاثًا
और ज़मीन की	वो पैदा करता है	जो	वो चाहता है	वो अता करता है	जिसके लिए	वो चाहता है	लड़कियां

وَّيَهَبُ	لِمَنْ	يَّشَآءُ	الذُّكُوْرَ ۙ (49)	اَوْ	يُزَوِّجُهُمْ	ذُكْرَانًا
और वो अता करता है	जिसके लिए	वो चाहता है	लड़के	या	वो मिला-जुला कर देता है उन्हें	लड़के

وَّاِنَاثًا ۚ	وَيَجْعَلُ	مَنْ	يَّشَآءُ	عَقِيْمًا ؕ	اِنَّهٗ	عَلِيْمٌ
और लड़कियां	और वो बना देता है	जिसे	वो चाहता है	बांझ	बेशक वो	ख़ूब इल्म वाला है

قَدِيْرٌ (50)	وَمَا	كَانَ	لِبَشَرٍ	اَنْ	يُّكَلِّمَهُ	اللّٰهُ	اِلَّا
ख़ूब क़ुदरत वाला है	और नहीं	है	किसी इंसान के लिए	कि	कलाम करे उससे	अल्लाह	मगर

وَحْيًا	اَوْ	مِنْ وَّرَآئِ	حِجَابٍ	اَوْ	يُرْسِلَ	رَسُوْلًا	فَيُوْحِيَ
वही के तौर पर	या	पीछे से	पर्दे के	या	वो भेजे	कोई रसूल (फ़रिश्ता)	तो वो वही पहुंचाता है

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِاِذْنِهٖ	مَا	يَشَآءُ ؕ	اِنَّهٗ	عَلِيٌّ	حَكِيْمٌ (51)	وَكَذٰلِكَ
उसके इज़्न से	जो	वो चाहता है	यक़ीनन वो	बहुत बुलंद है	ख़ूब हिकमत वाला है	और इसी तरह

اَوْحَيْنَآ	اِلَيْكَ	رُوْحًا	مِّنْ اَمْرِنَا ؕ	مَا	كُنْتَ	تَدْرِيْ
वही की हमने	आपकी तरफ़	एक रूह (क़ुरआन) की	अपने हुक्म से	ना	थे आप	आप जानते

مَا	الْكِتٰبُ	وَلَا	الْاِيْمَانُ	وَلٰكِنْ	جَعَلْنٰهُ	نُوْرًا	نَّهْدِيْ
क्या है	किताब	और ना	ईमान	और लेकिन	बनाया हमने उसे	ऐसा नूर	हम हिदायत देते हैं

بِهٖ	مَنْ	نَّشَآءُ	مِنْ عِبَادِنَا ؕ	وَاِنَّكَ	لَتَهْدِيْۤ	اِلٰى صِرَاطٍ
साथ इसके	जिसे	हम चाहते हैं	अपने बंदों में से	और बेशक आप	अलबत्ता रहनुमाई करते हैं	तरफ़ रास्ते

مُّسْتَقِيْمٍ (52) ۙ	صِرَاطِ	اللّٰهِ	الَّذِيْ	لَهٗ	مَا	فِي السَّمٰوٰتِ
सीधे के	रास्ता	अल्लाह का	वो जो	उसी के लिए है	जो कुछ	आसमानों में है

وَمَا	فِي الْاَرْضِ ؕ	اَلَآ	اِلَى اللّٰهِ	تَصِيْرُ	الْاُمُوْرُ (53) ع
और जो कुछ	ज़मीन में है	ख़बरदार	तरफ़ अल्लाह ही के	लौटते हैं	तमाम मामलात

ع 5 10 6

اٰيَاتُهَا: 89 — 43 سُوْرَةُ الزُّخْرُفِ مَكِّيَّةٌ 63 — رُكُوْعَاتُهَا: 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ع 11

حٰمٓ (1) ۚ	وَالْكِتٰبِ	الْمُبِيْنِ (2) ۙ	اِنَّا	جَعَلْنٰهُ	قُرْءٰنًا	عَرَبِيًّا
حٰمٓ	क़सम है किताब	वाज़ेह की	बेशक हमने	बनाया हमने उसे	क़ुरआन	अरबी

لَعَلَّكُمْ	تَعْقِلُوْنَ (3) ج	وَاِنَّهٗ	فِيْۤ اُمِّ الْكِتٰبِ	لَدَيْنَا	لَعَلِيٌّ
ताकि तुम	तुम समझ सको	और बेशक वो	असल किताब में है	हमारे पास	अलबत्ता बहुत बुलंद है

حَكِيْمٌ (4) ط	اَفَنَضْرِبُ	عَنْكُمُ	الذِّكْرَ	صَفْحًا	اَنْ	كُنْتُمْ
हिक्मत से लबरेज़ है	क्या फिर हम रोक लें	तुम से	इस नसीहत को	ऐराज़ करते हुए	कि	हो तुम

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فِي الْاَوَّلِيْنَ (6)	مِنْ نَّبِيٍّ	اَرْسَلْنَا	وَكَمْ	مُّسْرِفِيْنَ (5)	قَوْمًا
पहलों में	नबियों में से	भेजे हमने	और कितने ही	हद से बढ़ने वाले	लोग

يَسْتَهْزِءُوْنَ (7)	بِهٖ	كَانُوْا	اِلَّا	مِّنْ نَّبِيٍّ	يَاْتِيْهِمْ	وَمَا
वो मज़ाक़ उड़ाते	उसका	थे वो	मगर	कोई नबी	आया उनके पास	और नहीं

الْاَوَّلِيْنَ (8)	مَثَلُ	وَّمَضٰى	بَطْشًا	مِنْهُمْ	اَشَدَّ	فَاَهْلَكْنَآ
पहलों की	मिसाल	और गुज़र चुकी	पकड़ में	उनमें से	सबसे शदीद को	तो हलाक कर दिया हमने

لَيَقُوْلُنَّ	وَالْاَرْضَ	السَّمٰوٰتِ	خَلَقَ	مَّنْ	سَاَلْتَهُمْ	وَلَئِنْ
अलबत्ता वो ज़रूर कहेंगे	और ज़मीन को	आसमानों	पैदा किया	किसने	पूछें आप उनसे	और अलबत्ता अगर

الْاَرْضَ	لَكُمُ	جَعَلَ	الَّذِيْ	الْعَلِيْمُ (9) ۙ	الْعَزِيْزُ	خَلَقَهُنَّ
ज़मीन को	तुम्हारे लिए	बनाया	वो जिसने	ख़ूब इल्म वाले ने	निहायत ग़ालिब	पैदा किया उन्हें

تَهْتَدُوْنَ (10) ج	لَعَلَّكُمْ	سُبُلًا	فِيْهَا	لَكُمْ	وَّجَعَلَ	مَهْدًا
तुम राह पाओ	ताकि तुम	रास्ते	उसमें	तुम्हारे लिए	और उसने बनाए	बिछौना

بِهٖ	فَاَنْشَرْنَا	بِقَدَرٍ ج	مَآءًۢ	مِنَ السَّمَآءِ	نَزَّلَ	وَالَّذِيْ
साथ उसके	फिर ज़िंदा किया हमने	साथ एक अंदाज़े के	पानी	आसमान से	उतारा	और वो जिसने

الْاَزْوَاجَ	خَلَقَ	وَالَّذِيْ	تُخْرَجُوْنَ (11)	كَذٰلِكَ	مَّيْتًا ج	بَلْدَةً
जोड़े	बनाए	और वो जिसने	तुम निकाले जाओगे	इसी तरह	मुर्दा को	शहर

تَرْكَبُوْنَ (12) ۙ	مَا	وَالْاَنْعَامِ	مِّنَ الْفُلْكِ	لَكُمْ	وَجَعَلَ	كُلَّهَا
तुम सवारी करते हो	जिन पर	और मवेशियों को	कश्तियों	तुम्हारे लिए	और उसने बनाया	सारे के सारे

اِذَا	رَبِّكُمْ	نِعْمَةَ	تَذْكُرُوْا	ثُمَّ	عَلٰى ظُهُوْرِهٖ	لِتَسْتَوٗا
जब	अपने रब की	नेअमत	तुम याद करो	फिर	उनकी पुश्तों पर	ताकि तुम जम कर बैठो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

هٰذَا	لَنَا	سَخَّرَ	الَّذِىْ	سُبْحٰنَ	وَتَقُوْلُوْا	عَلَيْهِ	اسْتَوَيْتُمْ
इसे	हमारे लिए	मुसख़्ख़र किया	वो जिसने	पाक है	और तुम कहो	उन पर	तुम जम कर बैठ जाओ

لَمُنْقَلِبُوْنَ ⑭	اِلٰى رَبِّنَا	وَاِنَّاۤ	مُقْرِنِيْنَ ⑬ لا	لَهٗ	كُنَّا	وَمَا
यक़ीनन पलटने वाले हैं	तरफ़ अपने रब के	और बेशक हम	क़ाबू में लाने वाले	इसे	थे हम	और ना

لَكَفُوْرٌ	الْاِنْسَانَ	اِنَّ	جُزْءًا ط	مِنْ عِبَادِهٖ	لَهٗ	وَجَعَلُوْا
यक़ीनन बहुत नाशुक्रा है	इंसान	बेशक	एक जुज़ (औलाद)	उसके बंदों में से	उसके लिए	और उन्होंने बना दिया

وَّاَصْفٰىكُمْ	بَنٰتٍ	يَخْلُقُ	مِمَّا	اتَّخَذَ	اَمِ	مُّبِيْنٌ ⑮ ع ط
और चुन लिया तुम्हें	बेटियां	वो पैदा करता है	उसमें से जो	उसने बना लीं	या	खुल्लम-खुल्ला

ع 15 1 7

لِلرَّحْمٰنِ	ضَرَبَ	بِمَا	اَحَدُهُمْ	بُشِّرَ	وَاِذَا	بِالْبَنِيْنَ ⑯
रहमान के लिए	उसने बयान की	साथ उसके जो	उनमें से किसी एक को	ख़ुशख़बरी दी जाती है	हालांकि जब	बेटों के लिए

يُّنَشَّؤُا	اَوَمَنْ	كَظِيْمٌ ⑰	وَّهُوَ	مُسْوَدًّا	وَجْهُهٗ	ظَلَّ	مَثَلًا
पाला जाता है	क्या भला जिसे	ग़म से भरा होता है	और वो	स्याह	चेहरा उसका	हो जाता है	मिसाल

الْمَلٰٓئِكَةَ	وَجَعَلُوا	مُبِيْنٍ ⑱	غَيْرُ	فِى الْخِصَامِ	وَهُوَ	فِى الْحِلْيَةِ
फ़रिश्तों को	और उन्होंने बना लिया	वाज़ेह है	ग़ैर	झगड़े में	और वो	ज़ेवरात में

خَلْقَهُمْ ط	اَشَهِدُوْا	اِنَاثًا ط	الرَّحْمٰنِ	عِبٰدُ	هُمْ	الَّذِيْنَ
उनकी पैदाइश (के वक़्त)	क्या वो हाज़िर थे	औरतें	रहमान के	बंदे हैं	वो	जो

الرَّحْمٰنُ	شَآءَ	لَوْ	وَقَالُوْا	وَيُسْـَٔلُوْنَ ⑲	شَهَادَتُهُمْ	سَتُكْتَبُ
रहमान	चाहता	अगर	और वो कहते हैं	और वो पूछे जाएंगे	गवाही उनकी	ज़रूर लिखी जाएगी

هُمْ	اِنْ	مِنْ عِلْمٍ ق	بِذٰلِكَ	لَهُمْ	مَا	عَبَدْنٰهُمْ ط	مَا
वो	नहीं हैं	कोई इल्म	इसका	उनके लिए	नहीं	इबादत करते हम उनकी	ना

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِهٖ	فَهُمۡ	مِّنۡ قَبۡلِهٖ	كِتٰبًا	اٰتَيۡنٰهُمۡ	اَمۡ	يَخۡرُصُوۡنَ ؕ (20)	اِلَّا
उसे	तो वो	इससे पहले	कोई किताब	दी हमने उन्हें	या	वो अंदाज़े लगाते हैं	मगर

عَلٰٓى اُمَّةٍ	اٰبَآءَنَا	وَجَدۡنَآ	اِنَّا	قَالُوۡٓا	بَلۡ	مُسۡتَمۡسِكُوۡنَ (21)
एक तरीक़े पर	अपने आबा ओ अजदाद को	पाया हमने	बेशक हम	उन्होंने कहा	बल्कि	मज़बूत पकड़े हुए हैं

مِنۡ قَبۡلِكَ	اَرۡسَلۡنَا	مَآ	وَكَذٰلِكَ	مُّهۡتَدُوۡنَ (22)	عَلٰٓى اٰثٰرِهِمۡ	وَاِنَّا
आपसे क़ब्ल	भेजा हमने	नहीं	और इसी तरह	राह पाने वाले हैं	उन्हीं के नक़्शे क़दम पर	और बेशक हम

وَجَدۡنَآ	اِنَّا	مُتۡرَفُوۡهَآ ۙ	قَالَ	اِلَّا	مِّنۡ نَّذِيۡرٍ	فِىۡ قَرۡيَةٍ
पाया हमने	बेशक हम	उसके ख़ुशहाल लोगों ने	कहा	मगर	कोई डराने वाला	किसी बस्ती में

اَوَلَوۡ	قٰلَ	مُّقۡتَدُوۡنَ (23)	عَلٰٓى اٰثٰرِهِمۡ	وَّاِنَّا	عَلٰٓى اُمَّةٍ	اٰبَآءَنَا
क्या भला अगर	उसने कहा	पीछे चलने वाले हैं	उन्हीं के नक़्शे क़दम पर	और बेशक हम	एक तरीक़े पर	अपने आबा ओ अजदाद को

اٰبَآءَكُمۡ ؕ	عَلَيۡهِ	وَجَدۡتُّمۡ	مِمَّا	بِاَهۡدٰى	جِئۡتُكُمۡ
अपने आबा ओ अजदाद को	उस पर	पाया तुमने	उससे जो	ज़्यादा हिदायत वाला (तरीक़ा)	लाया हूं मैं तुम्हारे पास

فَانۡتَقَمۡنَا	كٰفِرُوۡنَ (24)	بِهٖ	اُرۡسِلۡتُمۡ	بِمَآ	اِنَّا	قَالُوۡٓا
पस इन्तिक़ाम लिया हमने	इंकार करने वाले हैं	साथ उसके	भेजे गए तुम	उसका जो	बेशक हम	उन्होंने कहा

ع 2 10 8

قَالَ	وَاِذۡ	الۡمُكَذِّبِيۡنَ ع (25)	عَاقِبَةُ	كَانَ	كَيۡفَ	فَانۡظُرۡ	مِنۡهُمۡ
कहा	और जब	झुठलाने वालों का	अंजाम	हुआ	किस तरह	तो देखो	उनसे

تَعۡبُدُوۡنَ ۙ (26)	مِّمَّا	بَرَآءٌ	اِنَّنِىۡ	وَقَوۡمِهٖۤ	لِاَبِيۡهِ	اِبۡرٰهِيۡمُ
तुम इबादत करते हो	उनसे जिनकी	बेज़ार हूं	बेशक मैं	और अपनी क़ौम से	अपने बाप से	इब्राहीम ने

كَلِمَةًۢ	وَجَعَلَهَا	سَيَهۡدِيۡنِ (27)	فَاِنَّهٗ	فَطَرَنِىۡ	الَّذِىۡ	اِلَّا
एक बात	और उसने बना दिया उसे	वो ज़रूर हिदायत देगा मुझे	तो बेशक वो	पैदा किया मुझे	उसके जिसने	सिवाए

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بَاقِيَةً	فِیْ عَقِبِهٖ	لَعَلَّهُمْ	يَرْجِعُوْنَ ﴿28﴾	بَلْ	مَتَّعْتُ	هٰٓؤُلَآءِ
बाक़ी रहने वाली	अपने पिछलों में	ताकि वो	वो रुजूअ करें	बल्कि	सामाने ज़िंदगी दिया मैंने	उन्हें

وَاٰبَآءَهُمْ	حَتّٰى	جَآءَهُمُ	الْحَقُّ	وَرَسُوْلٌ	مُّبِيْنٌ ﴿29﴾	وَلَمَّا
और उनके आबा ओ अजदाद को	यहां तक कि	आ गया उनके पास	हक़	और रसूल	वाज़ेह करने वाला	और जब

جَآءَهُمُ	الْحَقُّ	قَالُوْا	هٰذَا	سِحْرٌ	وَّاِنَّا	بِهٖ	كٰفِرُوْنَ ﴿30﴾
आ गया उनके पास	हक़	उन्होंने कहा	ये	जादू है	और बेशक हम	इसका	इंकार करने वाले हैं

وَقَالُوْا	لَوْلَا	نُزِّلَ	هٰذَا	الْقُرْاٰنُ	عَلٰى رَجُلٍ	مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ
और उन्होंने कहा	क्यों नहीं	नाज़िल किया गया	ये	क़ुरआन	ऊपर किसी शख़्स के	दो बस्तियों में से

عَظِيْمٍ ﴿31﴾	اَهُمْ	يَقْسِمُوْنَ	رَحْمَتَ	رَبِّكَ ؕ	نَحْنُ	قَسَمْنَا	بَيْنَهُمْ
बहुत बड़े	क्या वो	वो तक़्सीम करते हैं	रहमत	आपके रब की	हम	तक़सीम कर रखी है हमने	दर्मियान उनके

مَّعِيْشَتَهُمْ	فِی الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا	وَرَفَعْنَا	بَعْضَهُمْ	فَوْقَ	بَعْضٍ
मईशत उनकी	ज़िंदगी में	दुनिया की	और बुलंद किया हमने	उनके बाज़ को	ऊपर	बाज़ के

دَرَجٰتٍ	لِّيَتَّخِذَ	بَعْضُهُمْ	بَعْضًا	سُخْرِيًّا ؕ	وَرَحْمَتُ	رَبِّكَ
दरजात में	ताकि बनाएं	उनके बाज़	बाज़ को	ख़िदमतगार	और रहमत	आपके रब की

خَيْرٌ	مِّمَّا	يَجْمَعُوْنَ ﴿32﴾	وَلَوْلَآ	اَنْ	يَّكُوْنَ	النَّاسُ	اُمَّةً
बेहतर है	उससे जो	वो जमा करते हैं	और अगर ये ना होता	कि	हो जाएंगे	लोग	उम्मत

وَّاحِدَةً	لَّجَعَلْنَا	لِمَنْ	يَّكْفُرُ	بِالرَّحْمٰنِ	لِبُيُوْتِهِمْ	سُقُفًا
एक ही	अलबत्ता बना देते हम	उनके लिए जो	कुफ़्र करते हैं	रहमान का	उनके घरों की	छतें

مِّنْ فِضَّةٍ	وَّمَعَارِجَ	عَلَيْهَا	يَظْهَرُوْنَ ﴿33﴾ لا	وَلِبُيُوْتِهِمْ	اَبْوَابًا
चांदी से	और सीढ़ियां	जिन पर	वो चढ़ते हैं	और उनके घरों के	दरवाज़े

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَسُرُرًا	عَلَيْهَا	يَتَّكِـُٔوْنَ ﴿34﴾ لا	وَزُخْرُفًا ط	وَاِنْ	كُلُّ	ذٰلِكَ	لَمَّا
और तख़्त	जिन पर	वो तकिया लगाते हैं	और सोने के भी	और नहीं है	सब कुछ	ये	मगर

3 ع 10 9

مَتَاعُ	الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا ط	وَالْاٰخِرَةُ	عِنْدَ رَبِّكَ	لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿35﴾ ع
सामान	ज़िंदगी का	दुनिया की	और आख़िरत	आपके रब के नज़दीक	मुत्तक़ी लोगों के लिए है

وَمَنْ	يَّعْشُ	عَنْ ذِكْرِ	الرَّحْمٰنِ	نُقَيِّضْ	لَهٗ	شَيْطٰنًا	فَهُوَ
और जो	अंधा बन जाए	ज़िक्र से	रहमान के	हम मुक़र्रर कर देते हैं	उसके लिए	एक शैतान	तो वो

لَهٗ	قَرِيْنٌ ﴿36﴾	وَاِنَّهُمْ	لَيَصُدُّوْنَهُمْ	عَنِ السَّبِيْلِ	وَيَحْسَبُوْنَ
उसका	साथी हो जाता है	और बेशक वो	अलबत्ता वो रोकते हैं उन्हें	रास्ते से	और वो समझते हैं

اَنَّهُمْ	مُّهْتَدُوْنَ ﴿37﴾	حَتّٰٓى	اِذَا	جَآءَنَا	قَالَ	يٰلَيْتَ
कि बेशक वो	हिदायत याफ़्ता हैं	यहां तक कि	जब	वो आएगा हमारे पास	वो कहेगा	ऐ काश

بَيْنِىْ	وَبَيْنَكَ	بُعْدَ	الْمَشْرِقَيْنِ	فَبِئْسَ	الْقَرِيْنُ ﴿38﴾	وَلَنْ
दर्मियान मेरे	और दर्मियान तुम्हारे	दूरी (होती)	दो मशरिक़ों की	तो कितना बुरा है	साथी	और हरगिज़ ना

يَّنْفَعَكُمُ	الْيَوْمَ	اِذْ	ظَّلَمْتُمْ	اَنَّكُمْ	فِى الْعَذَابِ	مُشْتَرِكُوْنَ ﴿39﴾
वो नफ़ा देगा तुम्हें	आज	जब	ज़ुल्म कर चुके तुम	बेशक तुम	अज़ाब में	मुश्तरिक हो

اَفَاَنْتَ	تُسْمِعُ	الصُّمَّ	اَوْ	تَهْدِى	الْعُمْىَ	وَمَنْ	كَانَ
क्या भला आप	आप सुनाऐंगे	बहरों को	या	आप राह दिखाऐंगे	अंधों को	और उसे जो	हो

فِىْ ضَلٰلٍ	مُّبِيْنٍ ﴿40﴾	فَاِمَّا	نَذْهَبَنَّ	بِكَ	فَاِنَّا	مِنْهُمْ
गुमराही में	खुली	फिर अगर	हम ले जाऐं	आपको	तो बेशक हम	उनसे

مُّنْتَقِمُوْنَ ﴿41﴾ لا	اَوْ	نُرِيَنَّكَ	الَّذِىْ	وَعَدْنٰهُمْ	فَاِنَّا	عَلَيْهِمْ
इन्तिक़ाम लेने वाले हैं	या	हम दिखाऐं आपको	वो जिसका	वादा किया हमने उनसे	तो बेशक हम	उन पर

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مُّقْتَدِرُوْنَ (42)	فَاسْتَمْسِكْ	بِالَّذِيْٓ	اُوْحِيَ	اِلَيْكَ ج	اِنَّكَ	عَلٰى صِرَاطٍ
क़ुदरत रखने वाले हैं	पस मज़बूत थाम लीजिए	उसे जो	वही की जाती है	तरफ आपके	बेशक आप	रास्ते पर हैं

مُّسْتَقِيْمٍ (43)	وَاِنَّهٗ	لَذِكْرٌ	لَّكَ	وَلِقَوْمِكَ ج	وَسَوْفَ
सीधे	और बेशक ये	अलबत्ता एक नसीहत है	आपके लिए	और आपकी क़ौम के लिए	और अनक़रीब

تُسْــَٔلُوْنَ (44)	وَسْــَٔلْ	مَنْ	اَرْسَلْنَا	مِنْ قَبْلِكَ	مِنْ رُّسُلِنَآ	اَجَعَلْنَا
तुम पूछे जाओगे	और पूछ लीजिए	उससे जिसे	भेजा हमने	आपसे क़ब्ल	अपने रसूलों में से	क्या बनाए हमने

ع 4 10 10

مِنْ دُوْنِ	الرَّحْمٰنِ	اٰلِهَةً	يُّعْبَدُوْنَ (45) ع	وَلَقَدْ	اَرْسَلْنَا	مُوْسٰى
सिवाए	रहमान के	कुछ इलाह	(जिनकी) बंदगी की जाए	और अलबत्ता तहक़ीक़	भेजा हमने	मूसा को

بِاٰيٰتِنَآ	اِلٰى فِرْعَوْنَ	وَمَلَا۟ئِهٖ	فَقَالَ	اِنِّيْ	رَسُوْلُ	رَبِّ
साथ अपनी निशानियों के	तरफ़ फ़िरऔन	और उसके सरदारों के	तो उसने कहा	बेशक मैं	रसूल हूं	रब का

الْعٰلَمِيْنَ (46)	فَلَمَّا	جَآءَهُمْ	بِاٰيٰتِنَآ	اِذَا	هُمْ	مِّنْهَا	يَضْحَكُوْنَ (47)
तमाम जहानों के	फिर जब	वो लाया उनके पास	निशानियां हमारी	तब	वो	उनसे	वो हंसते थे

وَمَا	نُرِيْهِمْ	مِّنْ اٰيَةٍ	اِلَّا	هِيَ	اَكْبَرُ	مِنْ اُخْتِهَا ز	وَاَخَذْنٰهُمْ
और नहीं	हम दिखाते उन्हें	कोई निशानी	मगर	वो	ज़्यादा बड़ी होती थी	अपने जैसी से	और पकड़ लिया हमने उन्हें

بِالْعَذَابِ	لَعَلَّهُمْ	يَرْجِعُوْنَ (48)	وَقَالُوْا	يٰٓاَيُّهَ	السّٰحِرُ	ادْعُ	لَنَا
साथ अज़ाब के	ताकि वो	वो लौट आएं	और उन्होंने कहा	ऐ	जादूगर	दुआ कर	हमारे लिए

رَبَّكَ	بِمَا	عَهِدَ	عِنْدَكَ ج	اِنَّنَا	لَمُهْتَدُوْنَ (49)	فَلَمَّا
अपने रब से	बवजह उसके जो	उसने अहद किया	तेरे पास	बेशक हम	ज़रूर हिदायत पा लेंगे	फिर जब

كَشَفْنَا	عَنْهُمُ	الْعَذَابَ	اِذَا	هُمْ	يَنْكُثُوْنَ (50)	وَنَادٰى	فِرْعَوْنُ
हटा देते हम	उनसे	अज़ाब को	तब	वो	वो अहद तोड़ देते	और पुकारा	फ़िरऔन ने

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الۡاَنۡهٰرُ	وَهٰذِهِ	مِصۡرَ	مُلۡكُ	لِىۡ	اَلَيۡسَ	يٰقَوۡمِ	قَالَ	فِىۡ قَوۡمِهٖ
नहरें	और ये	मिस्र की	बादशाहत	मेरे लिए	क्या नहीं है	ऐ मेरी क़ौम	कहा	अपनी क़ौम में

مِّنۡ هٰذَا	خَيۡرٌ	اَنَا	اَمۡ	تُبۡصِرُوۡنَ (51) ؕ	اَفَلَا	مِنۡ تَحۡتِىۡ ۚ	تَجۡرِىۡ
उस (शख़्स) से	बेहतर हूं	मैं	बल्कि	तुम देखते	क्या फिर नहीं	मेरे नीचे से	जो बहती हैं

اُلۡقِىَ	فَلَوۡلَاۤ	يُبِيۡنُ (52)	يَكَادُ	وَّلَا	مَهِيۡنٌ ۙ	هُوَ	الَّذِىۡ
डाले गए	तो क्यों नहीं	वो वाज़ेह कर सके (बात को)	क़रीब कि वो	और नहीं	हक़ीर है	वो	वो जो

مُقۡتَرِنِيۡنَ (53)	الۡمَلٰٓـئِكَةُ	مَعَهُ	جَآءَ	اَوۡ	مِّنۡ ذَهَبٍ	اَسۡوِرَةٌ	عَلَيۡهِ
जमा होकर	फ़रिश्ते	साथ उसके	आए	या	सोने के	कंगन	उस पर

قَوۡمًا	كَانُوۡا	اِنَّهُمۡ	فَاَطَاعُوۡهُ ؕ	قَوۡمَهٗ	فَاسۡتَخَفَّ
लोग	थे वो	बेशक वो	तो उन्होंने अताअत की उसकी	अपनी क़ौम को	तो उसने हल्का (बेअक़्ल) कर दिया

فَاَغۡرَقۡنٰهُمۡ	مِنۡهُمۡ	انْتَقَمۡنَا	اٰسَفُوۡنَا	فَلَمَّاۤ	فٰسِقِيۡنَ (54)
फिर ग़र्क़ कर दिया हमने उन्हें	उनसे	इन्तिक़ाम लिया हमने	उन्होंने गुस्सा दिलाया हमें	तो जब	फ़ासिक़

5 ع 11 11

وَلَمَّا	لِّلۡاٰخِرِيۡنَ (56) ع	وَّمَثَلًا	سَلَفًا	فَجَعَلۡنٰهُمۡ	اَجۡمَعِيۡنَ (55) ۙ
और जब	बाद वालों के लिए	और एक मिसाल	गए गुज़रे	तो बना दिया हमने उन्हें	सब के सब को

يَصِدُّوۡنَ (57)	مِنۡهُ	قَوۡمُكَ	اِذَا	مَثَلًا	ابۡنُ مَرۡيَمَ	ضُرِبَ
चीख़ने चिल्लाने लगे	इससे	आपकी क़ौम (के लोग)	अचानक	बतौरे मिसाल	मरियम के बेटे को	बयान किया गया

اِلَّا	لَكَ	ضَرَبُوۡهُ	مَا	هُوَ ؕ	اَمۡ	خَيۡرٌ	ءَاٰلِهَتُنَا	وَقَالُوۡۤا
मगर	आपके लिए	उन्होंने बयान किया उसे	नहीं	वो	या	बेहतर हैं	क्या इलाह हमारे	और उन्होंने कहा

عَبۡدٌ	اِلَّا	هُوَ	اِنۡ	خَصِمُوۡنَ (58)	قَوۡمٌ	هُمۡ	بَلۡ	جَدَلًا ؕ
एक बंदा	मगर	वो	नहीं	झगड़ालू	लोग हैं	वो	बल्कि	झगड़ने को

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَنْعَمْنَا	عَلَيْهِ	وَجَعَلْنٰهُ	مَثَلًا	لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿59﴾ ط	وَلَوْ	نَشَآءُ
इनआम किया हमने	जिस पर	और बना दिया हमने उसे	एक मिसाल	बनी इस्राईल के लिए	और अगर	हम चाहते

لَجَعَلْنَا	مِنْكُمْ	مَّلٰٓئِكَةً	فِي الْاَرْضِ	يَخْلُفُوْنَ ﴿60﴾	وَاِنَّهٗ	لَعِلْمٌ
अलबत्ता बना देते हम	तुम्हारी जगह	फ़रिश्ते	जो ज़मीन में	वो जानशीन होते	और बेशक वो	अलबत्ता एक अलामत है

لِّلسَّاعَةِ	فَلَا تَمْتَرُنَّ	بِهَا	وَاتَّبِعُوْنِ ط	هٰذَا	صِرَاطٌ	مُّسْتَقِيْمٌ ﴿61﴾
क़यामत की	तो ना तुम हरगिज़ शक करो	इसमें	और पैरवी करो मेरी	ये है	रास्ता	सीधा

وَلَا	يَصُدَّنَّكُمُ	الشَّيْطٰنُ ج	اِنَّهٗ	لَكُمْ	عَدُوٌّ	مُّبِيْنٌ ﴿62﴾	وَلَمَّا
और ना	हरगिज़ रोके तुम्हें	शैतान	बेशक वो	तुम्हारा	दुश्मन है	खुल्लम-खुल्ला	और जब

جَآءَ	عِيْسٰى	بِالْبَيِّنٰتِ	قَالَ	قَدْ	جِئْتُكُمْ	بِالْحِكْمَةِ
लाए	ईसा	वाज़ेह निशानियां	उसने कहा	तहक़ीक़	लाया हूं मैं तुम्हारे पास	हिक्मत

وَلِاُبَيِّنَ	لَكُمْ	بَعْضَ	الَّذِيْ	تَخْتَلِفُوْنَ	فِيْهِ ج	فَاتَّقُوا
और ताकि मैं वाज़ेह कर दूं	तुम्हारे लिए	बाज़	वो चीज़	तुम इख़्तिलाफ़ करते हो	जिसमें	पस डरो

اللّٰهَ	وَاَطِيْعُوْنِ ﴿63﴾	اِنَّ	اللّٰهَ	هُوَ	رَبِّيْ	وَرَبُّكُمْ	فَاعْبُدُوْهُ ط
अल्लाह से	और इताअत करो मेरी	बेशक	अल्लाह	वो ही है	रब मेरा	और रब तुम्हारा	पस इबादत करो उसकी

هٰذَا	صِرَاطٌ	مُّسْتَقِيْمٌ ﴿64﴾	فَاخْتَلَفَ	الْاَحْزَابُ	مِنْ بَيْنِهِمْ ج	فَوَيْلٌ
ये है	रास्ता	सीधा	पस इख़्तिलाफ़ किया	गिरोहों ने	आपस में	पस हलाकत है

لِّلَّذِيْنَ	ظَلَمُوْا	مِنْ عَذَابِ	يَوْمٍ اَلِيْمٍ ﴿65﴾	هَلْ	يَنْظُرُوْنَ
उनके लिए जिन्होंने	ज़ुल्म किया	अज़ाब से	दर्दनाक दिन के	नहीं	वो इन्तिज़ार करते

اِلَّا	السَّاعَةَ	اَنْ	تَاْتِيَهُمْ	بَغْتَةً	وَّهُمْ	لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿66﴾
मगर	क़यामत का	कि	वो आ जाए उनके पास	अचानक	और वो	ना वो शऊर रखते हों

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 6 11 12

اَلۡاَخِلَّآءُ	يَوۡمَئِذٍۭ	بَعۡضُهُمۡ	لِبَعۡضٍ	عَدُوٌّ	اِلَّا	الۡمُتَّقِيۡنَ (67) ع
तमाम दिली दोस्त	उस दिन	बाज़ उनके	बाज़ के	दुश्मन होंगे	सिवाए	मुत्तक़ी लोगों के

يٰعِبَادِ	لَا	خَوۡفٌ	عَلَيۡكُمُ	الۡيَوۡمَ	وَلَاۤ	اَنۡتُمۡ	تَحۡزَنُوۡنَ (68) ج
ऐ मेरे बंदो	ना	कोई ख़ौफ़ होगा	तुम पर	आज	और ना	तुम	तुम ग़मगीन होगे

اَلَّذِيۡنَ	اٰمَنُوۡا	بِاٰيٰتِنَا	وَكَانُوۡا	مُسۡلِمِيۡنَ (69) ج	اُدۡخُلُوا	الۡجَنَّةَ
वो लोग जो	ईमान लाए	हमारी आयात पर	और थे वो	फ़रमांबरदार	दाख़िल हो जाओ	जन्नत में

اَنۡتُمۡ	وَاَزۡوَاجُكُمۡ	تُحۡبَرُوۡنَ (70)	يُطَافُ	عَلَيۡهِمۡ	بِصِحَافٍ
तुम	और बीवियां तुम्हारी	तुम ख़ुश किए जाओगे	गर्दिश कराया जाएगा	उन पर	रकाबियों को

مِّنۡ ذَهَبٍ	وَّاَكۡوَابٍ ج	وَفِيۡهَا	مَا	تَشۡتَهِيۡهِ	الۡاَنۡفُسُ	وَتَلَذُّ
सोने की	और साग़र	और इसमें होगा	वो जो	ख़्वाहिश करेंगे जिसकी	दिल	और लज़्ज़त पाऐंगी

الۡاَعۡيُنُ ج	وَاَنۡتُمۡ	فِيۡهَا	خٰلِدُوۡنَ (71) ج	وَتِلۡكَ	الۡجَنَّةُ	الَّتِيۡۤ
निगाहें	और तुम	उनमें	हमेशा रहने वाले हो	और ये है	जन्नत	वो जो

اُوۡرِثۡتُمُوۡهَا	بِمَا	كُنۡتُمۡ	تَعۡمَلُوۡنَ (72)	لَكُمۡ	فِيۡهَا	فَاكِهَةٌ
वारिस बनाए गए हो तुम उसके	बवजह उसके जो	थे तुम	तुम अमल करते	तुम्हारे लिए	उसमें	फल होंगे

كَثِيۡرَةٌ	مِّنۡهَا	تَاۡكُلُوۡنَ (73)	اِنَّ	الۡمُجۡرِمِيۡنَ	فِيۡ عَذَابِ	جَهَنَّمَ
बहुत से	उनमें से	तुम खाओगे	बेशक	मुजरिम लोग	अज़ाब में (होंगे)	जहन्नम के

خٰلِدُوۡنَ (74) صلے	لَا يُفَتَّرُ	عَنۡهُمۡ	وَهُمۡ	فِيۡهِ	مُبۡلِسُوۡنَ (75) ج	وَمَا
हमेशा रहने वाले	ना कम किया जाएगा	उनसे	और वो	उसमें	मायूस होंगे	और नहीं

ظَلَمۡنٰهُمۡ	وَلٰكِنۡ	كَانُوۡا	هُمُ	الظّٰلِمِيۡنَ (76)	وَنَادَوۡا	يٰمٰلِكُ
ज़ुल्म किया हमने उन पर	और लेकिन	थे वो	वो ही	ज़ालिम	और वो पुकारेंगे	ऐ मालिक

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لِيَقْضِ	عَلَيْنَا	رَبُّكَ ؕ	قَالَ	اِنَّكُمْ	مّٰكِثُوْنَ ﴿77﴾	لَقَدْ	جِئْنٰكُمْ
चाहिए कि फ़ैसला कर दे	हम पर	रब तेरा	वो कहेगा	बेशक तुम	(यूं ही) रहने वाले हो	अलबत्ता तहक़ीक़	लाए हम तुम्हारे पास

بِالْحَقِّ	وَلٰكِنَّ	اَكْثَرَكُمْ	لِلْحَقِّ	كٰرِهُوْنَ ﴿78﴾	اَمْ	اَبْرَمُوْٓا
हक़	और लेकिन	अक्सर तुम्हारे	हक़ को	नापसंद करने वाले थे	बल्कि	उन्होंने पुख़्ता फ़ैसला किया

اَمْرًا	فَاِنَّا	مُبْرِمُوْنَ ﴿79﴾ ج	اَمْ	يَحْسَبُوْنَ	اَنَّا	لَا نَسْمَعُ
एक काम का	तो यक़ीनन हम भी	पुख़्ता फ़ैसला करने वाले हैं	या	वो समझते हैं	बेशक हम	नहीं हम सुनते

سِرَّهُمْ	وَنَجْوٰىهُمْ ؕ	بَلٰى	وَرُسُلُنَا	لَدَيْهِمْ	يَكْتُبُوْنَ ﴿80﴾
राज़ उनका	और सरगोशी उनकी	क्यों नहीं	और हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते)	उनके पास	वो लिखते हैं

قُلْ	اِنْ	كَانَ	لِلرَّحْمٰنِ	وَلَدٌ ۖۗ	فَاَنَا	اَوَّلُ	الْعٰبِدِيْنَ ﴿81﴾
कह दीजिए	अगर	है	रहमान के लिए	कोई औलाद	तो मैं	सबसे पहला हूं	इबादत करने वालों में

سُبْحٰنَ	رَبِّ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	رَبِّ	الْعَرْشِ	عَمَّا	يَصِفُوْنَ ﴿82﴾
पाक है	रब	आसमानों	और ज़मीन का	रब	अर्श का	उससे जो	वो बयान करते हैं

فَذَرْهُمْ	يَخُوْضُوْا	وَيَلْعَبُوْا	حَتّٰى	يُلٰقُوْا	يَوْمَهُمُ	الَّذِىْ
तो छोड़ दीजिए उन्हें	वो बहस करते रहें	और वो खेलते रहें	यहां तक कि	वो जा मिलें	अपने उस दिन से	जिसका

يُوْعَدُوْنَ ﴿83﴾	وَهُوَ	الَّذِىْ	فِى السَّمَآءِ	اِلٰهٌ	وَّفِى الْاَرْضِ	اِلٰهٌ ؕ
वो वादा किए जाते हैं	और वो ही है	जो	आसमान में	इलाह है	और ज़मीन में	इलाह है

وَهُوَ	الْحَكِيْمُ	الْعَلِيْمُ ﴿84﴾	وَتَبٰرَكَ	الَّذِىْ	لَهٗ	مُلْكُ
और वो ही है	बहुत हिकमत वाला	ख़ूब इल्म वाला	और बाबरकत है	वो जो	उसी के लिए है	बादशाहत

السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	وَمَا	بَيْنَهُمَا ج	وَعِنْدَهٗ	عِلْمُ	السَّاعَةِ ج
आसमानों	और ज़मीन की	और जो	दर्मियान है इन दोनों के	और उसी के पास है	इल्म	क़यामत का

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنْ دُوْنِهٖ	يَدْعُوْنَ	الَّذِيْنَ	يَمْلِكُ	وَلَا	تُرْجَعُوْنَ ﴿85﴾	وَاِلَيْهِ
उसके सिवा	वो पुकारते हैं	जिन्हें	वो इख़्तियार रखते	और नहीं	तुम लौटाए जाओगे	और उसी की तरफ़

وَلَئِنْ	يَعْلَمُوْنَ ﴿86﴾	وَهُمْ	بِالْحَقِّ	شَهِدَ	مَنْ	اِلَّا	الشَّفَاعَةَ
और अलबत्ता अगर	वो जानते हों	और वो	साथ हक़ के	गवाही दे	जो	मगर	शफ़ाअत का

يُؤْفَكُوْنَ ﴿87﴾ لا	فَاَنّٰى	اللّٰهُ	لَيَقُوْلُنَّ	خَلَقَهُمْ	مَّنْ	سَاَلْتَهُمْ
वो फेरे जाते हैं	तो कहां से	अल्लाह ने	अलबत्ता वो ज़रूर कहेंगे	पैदा किया उन्हें	किसने	पूछें आप उनसे

وقف لازم

لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿88﴾	قَوْمٌ	هٰٓؤُلَآءِ	اِنَّ	يٰرَبِّ	وَقِيْلِهٖ
नहीं वो ईमान लाएंगे	लोग	ये	बेशक	ऐ मेरे रब	क़सम है इस (रसूल) के क़ौल की

ع 7 22 13

يَعْلَمُوْنَ ﴿89﴾ ع	فَسَوْفَ	سَلٰمٌ ط	وَقُلْ	عَنْهُمْ	فَاصْفَحْ
वो जान लेंगे	पस अनक़रीब	सलाम है	और कह दीजिए	उनसे	पस दरगुज़र कीजिए

رُكُوْعَاتُهَا: 3 — 44 سُوْرَةُ الدُّخَانِ مَكِّيَّةٌ 64 — اٰيَاتُهَا: 59

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ع 12

مُّبٰرَكَةٍ	فِيْ لَيْلَةٍ	اَنْزَلْنٰهُ	اِنَّآ	وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿2﴾	حٰمٓ ﴿1﴾ ج
बरकत वाली	एक रात में	नाज़िल किया हमने इसे	बेशक हम	क़सम है वाज़ेह किताब की	حٰمٓ

حَكِيْمٍ ﴿4﴾ لا	اَمْرٍ	كُلُّ	يُفْرَقُ	فِيْهَا	مُنْذِرِيْنَ ﴿3﴾	كُنَّا	اِنَّا
मोहकम का	काम	हर	फ़ैसला किया जाता है	इसमें	डराने वाले	हैं हम	बेशक हम

مِّنْ رَّبِّكَ ط	رَحْمَةً	مُرْسِلِيْنَ ﴿5﴾ ج	كُنَّا	اِنَّا	مِّنْ عِنْدِنَا ط	اَمْرًا
आपके रब की तरफ़ से	बतौर रहमत	भेजने वाले	थे हम	बेशक हम	हमारे पास से	एक हुक्म का

وَمَا	وَالْاَرْضِ	السَّمٰوٰتِ	رَبِّ	الْعَلِيْمُ ﴿6﴾ لا	السَّمِيْعُ	هُوَ	اِنَّهٗ
और जो	और ज़मीन का	आसमानों	रब है	ख़ूब इल्म वाला	ख़ूब सुनने वाला	वो ही है	बेशक वो

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وقف لازم

هُوَ	اِلَّا	اِلٰهَ	لَآ	مُّوْقِنِيْنَ ⑦	كُنْتُمْ	اِنْ	بَيْنَهُمَا ۘ
वो ही	मगर	कोई इलाह (बरहक़)	नहीं	यक़ीन करने वाले	हो तुम	अगर	दर्मियान है उन दोनों के

هُمْ	بَلْ	الْاَوَّلِيْنَ ⑧	اٰبَآئِكُمُ	وَرَبُّ	رَبُّكُمْ	وَيُمِيْتُ ؕ	يُحْيٖ
वो	बल्कि	जो पहले थे	तुम्हारे आबा ओ अजदाद का	और रब	रब तुम्हारा	और वो मौत देता है	वो ज़िंदा करता है

بِدُخَانٍ	السَّمَآءُ	تَاْتِي	يَوْمَ	فَارْتَقِبْ	يَّلْعَبُوْنَ ⑨	فِيْ شَكٍّ
साथ धुऐं के	आसमान	आएगा	जिस दिन	पस इन्तिज़ार कीजिए	वो खेल रहे हैं	शक में

رَبَّنَا	اَلِيْمٌ ⑪	عَذَابٌ	هٰذَا	النَّاسَ ؕ	يَّغْشَى	مُّبِيْنٍ ⑩ ۙ
ऐ हमारे रब	दर्दनाक	अज़ाब	ये है	लोगों को	जो ढांप लेगा	खुले

الذِّكْرٰى	لَهُمُ	اَنّٰى	مُؤْمِنُوْنَ ⑫	اِنَّا	الْعَذَابَ	عَنَّا	اكْشِفْ
नसीहत	उनके लिए	कहां से है	ईमान लाने वाले हैं	बेशक हम	अज़ाब को	हमसे	हटा दे

وَقَالُوْا	عَنْهُ	تَوَلَّوْا	ثُمَّ	مُّبِيْنٌ ⑬ ۙ	رَسُوْلٌ	جَآءَهُمْ	وَقَدْ
और उन्होंने कहा	उससे	वो मुंह मोड़ गए	फिर	वाज़ेह करने वाला	एक रसूल	आ चुका उनके पास	हालांकि तहक़ीक़

وقف لازم

اِنَّكُمْ	قَلِيْلًا	الْعَذَابِ	كَاشِفُوا	اِنَّا	مَّجْنُوْنٌ ⑭ ۘ	مُعَلَّمٌ
बेशक तुम	थोड़ी देर के लिए	अज़ाब को	हटाने वाले हैं	बेशक हम	दीवाना है	सिखाया पढ़ाया

وقف لازم

مُنْتَقِمُوْنَ ⑯	اِنَّا	الْكُبْرٰى ۚ	الْبَطْشَةَ	نَبْطِشُ	يَوْمَ	عَآئِدُوْنَ ⑮ ۘ
इन्तिक़ाम लेने वाले हैं	बेशक हम	बहुत बड़ी	पकड़	हम पकड़ेंगे	जिस दिन	लौटने वाले हो

كَرِيْمٌ ⑰ ۙ	رَسُوْلٌ	وَجَآءَهُمْ	فِرْعَوْنَ	قَوْمَ	قَبْلَهُمْ	فَتَنَّا	وَلَقَدْ
मुअज़्ज़िज़	रसूल	और आया उनके पास	फ़िरऔन को	क़ौमे	इनसे क़ब्ल	आज़माया हमने	और अलबत्ता तहक़ीक़

اَمِيْنٌ ⑱ ۙ	رَسُوْلٌ	لَكُمْ	اِنِّيْ	اللّٰهِ ؕ	عِبَادَ	اِلَيَّ	اَدُّوْٓا	اَنْ
अमानतदार	एक रसूल हूं	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	अल्लाह के	बंदों को	मेरी तरफ़	हवाले कर दो	ये कि

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مُّبِيْنٍ (19) ج	بِسُلْطٰنٍ	اٰتِيْكُمْ	اِنِّيْٓ	عَلَى اللّٰهِ ج	لَّا تَعْلُوْا	وَّاَنْ
वाज़ेह	दलील	लाया हूं तुम्हारे पास	बेशक मैं	अल्लाह (के मुक़ाबले) पर	ना तुम सरकशी करो	और ये कि

لَّمْ	وَاِنْ	تَرْجُمُوْنِ (20) ز	اَنْ	وَرَبِّكُمْ	بِرَبِّيْ	عُذْتُ	وَاِنِّيْ
नहीं	और अगर	तुम संगसार करो मुझे	कि	और तुम्हारे रब की	अपने रब की	पनाह ले चुका मैं	और बेशक मैं

قَوْمٌ	هٰٓؤُلَآءِ	اَنَّ	رَبَّهٗٓ	فَدَعَا	فَاعْتَزِلُوْنِ (21)	لِيْ	تُؤْمِنُوْا
लोग	ये	बेशक	अपने रब को	तो उसने पुकारा	तो अलग हो जाओ मुझसे	मुझ पर	तुम ईमान लाते

وَاتْرُكِ	مُّتَّبَعُوْنَ (23) لا	اِنَّكُمْ	لَيْلًا	بِعِبَادِيْ	فَاَسْرِ	مُّجْرِمُوْنَ (22) الثلثة
और छोड़ दो	पीछा किए जाने वाले हो	बेशक तुम	रातों रात	मेरे बंदों को	तो ले चलो	मुजरिम हैं

مِنْ جَنّٰتٍ	تَرَكُوْا	كَمْ	مُّغْرَقُوْنَ (24)	جُنْدٌ	اِنَّهُمْ	رَهْوًا ط	الْبَحْرَ
बाग़ात	वो छोड़ गए	कितने ही	ग़र्क़ किए जाने वाले	लश्कर हैं	बेशक वो	साकिन	समुन्दर को

فِيْهَا	كَانُوْا	وَّنَعْمَةٍ	كَرِيْمٍ (26) لا	وَّمَقَامٍ	وَّزُرُوْعٍ	وَّعُيُوْنٍ (25) لا
जिसमें	थे वो	और राहत व आसाइश	उम्दा	और मक़ाम	और खेतियां	और चश्मे

بَكَتْ	فَمَا	اٰخَرِيْنَ (28)	قَوْمًا	وَاَوْرَثْنٰهَا	كَذٰلِكَ قف	فٰكِهِيْنَ (27) لا
रोए	तो ना	दूसरी को	क़ौम	और वारिस बना दिया हमने उनका	इसी तरह	ऐश करने वाले

نَجَّيْنَا	وَلَقَدْ	مُنْظَرِيْنَ (29) ع	كَانُوْا	وَمَا	وَالْاَرْضُ	السَّمَآءُ	عَلَيْهِمُ
निजात दी हमने	और अलबत्ता तहक़ीक़	मोहलत दिए जाने वाले	थे वो	और ना	और ज़मीन	आसमान	उन पर

كَانَ	اِنَّهٗ	مِنْ فِرْعَوْنَ ط	الْمُهِيْنِ (30) لا	مِنَ الْعَذَابِ	بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
था वो	बेशक वो	फ़िरऔन से	ज़िल्लत के	अज़ाब से	बनी इस्राईल को

عَلٰى عِلْمٍ	اخْتَرْنٰهُمْ	وَلَقَدِ	مِّنَ الْمُسْرِفِيْنَ (31)	عَالِيًا
इल्म की बिना पर	मुन्तख़िब कर लिया हमने उन्हें	और अलबत्ता तहक़ीक़	हद से बढ़ने वालों में से	सरकश

الثلثة

ع 1 29 14

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿32﴾ ج	وَاٰتَيْنٰهُمْ	مِّنَ الْاٰيٰتِ	مَا	فِيْهِ	بَلٰٓـؤٌا	مُّبِيْنٌ ﴿33﴾
तमाम जहानों पर	और दीं हमने उन्हें	निशानियां	जो	उनमें	आज़माइश थी	वाज़ेह

اِنَّ	هٰٓؤُلَآءِ	لَيَقُوْلُوْنَ ﴿34﴾ لا	اِنْ	هِيَ	اِلَّا	مَوْتَتُنَا	الْاُوْلٰى	وَمَا
बेशक	ये लोग	अलबत्ता वो कहते हैं	नहीं	ये	मगर	मौत हमारी	पहली	और नहीं

نَحْنُ	بِمُنْشَرِيْنَ ﴿35﴾	فَاْتُوْا	بِاٰبَآئِنَآ	اِنْ	كُنْتُمْ	صٰدِقِيْنَ ﴿36﴾
हम	उठाए जाने वाले हैं	पस ले आओ	हमारे आबा ओ अजदाद को	अगर	हो तुम	सच्चे

اَهُمْ	خَيْرٌ	اَمْ	قَوْمُ	تُبَّعٍ لا	وَّالَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ ط
क्या वो	बेहतर हैं	या	क़ौम	तुब्बअ की	और वो जो	उनसे पहले थे

اَهْلَكْنٰهُمْ ز	اِنَّهُمْ	كَانُوْا	مُجْرِمِيْنَ ﴿37﴾	وَمَا	خَلَقْنَا	السَّمٰوٰتِ
हलाक कर दिया हमने उन्हें	बेशक वो	थे वो	मुजरिम	और नहीं	पैदा किया हमने	आसमानों

وَالْاَرْضَ	وَمَا	بَيْنَهُمَا	لٰعِبِيْنَ ﴿38﴾	مَا	خَلَقْنٰهُمَآ	اِلَّا
और ज़मीन को	और जो	दर्मियान है इन दोनों के	खेलते हुए	नहीं	पैदा किया हमने इन दोनों को	मगर

بِالْحَقِّ	وَلٰكِنَّ	اَكْثَرَهُمْ	لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿39﴾	اِنَّ	يَوْمَ	الْفَصْلِ
साथ हक़ के	और लेकिन	अक्सर उनके	नहीं वो इल्म रखते	बेशक	दिन	फ़ैसले का

مِيْقَاتُهُمْ	اَجْمَعِيْنَ ﴿40﴾ لا	يَوْمَ	لَا يُغْنِيْ	مَوْلًى	عَنْ مَّوْلًى	شَيْئًا
मुक़र्रर वक़्त है उनका	सब के सब का	जिस दिन	ना काम आएगा	कोई दोस्त	किसी दोस्त के	कुछ भी

وَّلَا	هُمْ	يُنْصَرُوْنَ ﴿41﴾ لا	اِلَّا	مَنْ	رَّحِمَ	اللّٰهُ ط	اِنَّهٗ	هُوَ
और ना	वो	वो मदद किए जाऐंगे	मगर	जिस पर	रहम फ़रमाए	अल्लाह	यक़ीनन वो	वो ही है

الْعَزِيْزُ	الرَّحِيْمُ ﴿42﴾ ع	اِنَّ	شَجَرَتَ	الزَّقُّوْمِ ﴿43﴾ لا	طَعَامُ	الْاَثِيْمِ ﴿44﴾ ج ط
बहुत ज़बरदस्त	निहायत रहम करने वाला	बेशक	दरख़्त	ज़क़्क़ूम का	खाना है	गुनाहगार का

ع 2 13 15
معانقة 14

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

كَالْمُهْلِ ۚ	يَغْلِي	فِي الْبُطُونِ ۙ (45)	كَغَلْيِ	الْحَمِيمِ (46)	خُذُوهُ
पिघले हुए तांबे की तरह	जोश खाएगा	पेटों में	मानिंद जोश खाने	खौलते पानी के	(कहा जाएगा) पकड़ो इसे

فَاعْتِلُوهُ	إِلَىٰ	سَوَاءِ	الْجَحِيمِ (47) ق	ثُمَّ	صُبُّوا	فَوْقَ	رَأْسِهِ
पस घसीटो इसे	तरफ़	दर्मियान	जहन्नम के	फिर	उंडेल दो	ऊपर	उसके सर के

مِنْ عَذَابِ	الْحَمِيمِ (48) ط	ذُقْ ۚ	إِنَّكَ	أَنتَ	الْعَزِيزُ	الْكَرِيمُ (49)
अज़ाब से	खौलते पानी के	(कहा जाएगा) चखो	बेशक तुम	तुम ही	बहुत ज़बरदस्त	इज़्ज़त वाले थे

إِنَّ	هَٰذَا	مَا	كُنتُم	بِهِ	تَمْتَرُونَ (50)	إِنَّ	الْمُتَّقِينَ
बेशक	ये है	वो जो	थे तुम	इसमें	तुम शक करते	बेशक	मुत्तक़ी लोग

فِي مَقَامٍ	أَمِينٍ (51) ۙ	فِي جَنَّاتٍ	وَعُيُونٍ (52) ۚ	يَلْبَسُونَ	مِن سُندُسٍ
जगह पर होंगे	अमन वाली	बाग़ों में	और चश्मों में	वो पहनेंगे	बारीक रेशम

وَإِسْتَبْرَقٍ	مُّتَقَابِلِينَ (53) ۚ	كَذَٰلِكَ قف	وَزَوَّجْنَاهُم	بِحُورٍ	عِينٍ (54) ط
और मोटे रेशम से	आमने-सामने बैठने वाले	इसी तरह	और ब्याह देंगे हम उन्हें	गोरी औरतों से	बड़ी आंखों वाली

يَدْعُونَ	فِيهَا	بِكُلِّ	فَاكِهَةٍ	آمِنِينَ (55) ۙ	لَا يَذُوقُونَ	فِيهَا
वो तलब करेंगे	उसमें	हर क़िस्म के	फल	बेख़ौफ़ हो कर	ना वो चखेंगे	उसमें

الْمَوْتَ	إِلَّا	الْمَوْتَةَ	الْأُولَىٰ ج	وَوَقَاهُمْ	عَذَابَ	الْجَحِيمِ (56) ۙ	فَضْلًا
मौत को	सिवाए	मौत	पहली के	और वो बचा लेगा उन्हें	अज़ाब से	जहन्नम के	फ़ज़्ल है

مِّن رَّبِّكَ ط	ذَٰلِكَ	هُوَ	الْفَوْزُ	الْعَظِيمُ (57)	فَإِنَّمَا	يَسَّرْنَاهُ
आपके रब की तरफ़ से	यही	वो	कामयाबी है	बहुत बड़ी	पस बेशक	आसान कर दिया हमने उसे

بِلِسَانِكَ	لَعَلَّهُمْ	يَتَذَكَّرُونَ (58)	فَارْتَقِبْ	إِنَّهُم	مُّرْتَقِبُونَ (59) ع
आपकी ज़बान पर	शायद कि वो	वो नसीहत पकड़ें	पस आप इन्तिज़ार कीजिए	बेशक वो (भी)	इन्तिज़ार करने वाले हैं

ع 3 17 16

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

سُوْرَةُ الْجَاثِيَةِ مَكِّيَّةٌ 45 65

اٰيَاتُهَا: 37 رُكُوْعَاتُهَا: 4

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّ	الْحَكِيْمِ (2)	الْعَزِيْزِ	مِنَ اللّٰهِ	الْكِتٰبِ	تَنْزِيْلُ	حٰمٓ (1) ج
बेशक	ख़ूब हिक्मत वाला है	जो बहुत ज़बरदस्त है	अल्लाह की तरफ़ से	किताब का	नाज़िल करना है	حٰمٓ

وَمَا	وَفِيْ خَلْقِكُمْ	لِّلْمُؤْمِنِيْنَ (3) ط	لَاٰيٰتٍ	وَالْاَرْضِ	فِي السَّمٰوٰتِ
और जो	और तुम्हारी पैदाइश में	ईमान लाने वालों के लिए	अलबत्ता निशानियां हैं	और ज़मीन में	आसमानों में

الَّيْلِ	وَاخْتِلَافِ	يُّوْقِنُوْنَ (4) لا	لِّقَوْمٍ	اٰيٰتٌ	مِنْ دَآبَّةٍ	يَبُثُّ
रात	और इख़्तिलाफ़ में	जो यक़ीन रखते हैं	उन लोगों के लिए	निशानियां हैं	जानदारों में से	वो फैलाता है

فَاَحْيَا	مِنْ رِّزْقٍ	مِنَ السَّمَآءِ	اللّٰهُ	اَنْزَلَ	وَمَآ	وَالنَّهَارِ
फिर उसने ज़िंदा किया	रिज़्क़ में से	आसमान से	अल्लाह ने	उतारा	और जो	और दिन के

لِّقَوْمٍ	اٰيٰتٌ	الرِّيٰحِ	وَتَصْرِيْفِ	مَوْتِهَا	بَعْدَ	الْاَرْضَ	بِهِ
उन लोगों के लिए	निशानियां हैं	हवाओं की	और गर्दिश में	उसकी मौत के	बाद	ज़मीन को	साथ उसके

فَبِاَيِّ	بِالْحَقِّ ج	عَلَيْكَ	نَتْلُوْهَا	اللّٰهِ	اٰيٰتُ	تِلْكَ	يَّعْقِلُوْنَ (5)
तो साथ किस	साथ हक़ के	आप पर	हम पढ़ते हैं इन्हें	अल्लाह की	आयात हैं	ये	जो अक़्ल रखते हैं

اَفَّاكٍ	لِّكُلِّ	وَيْلٌ	يُؤْمِنُوْنَ (6)	وَاٰيٰتِهٖ	اللّٰهِ	بَعْدَ	حَدِيْثٍ
बहुत झूठे	वास्ते हर	हलाकत है	वो ईमान लाएंगे	और उसकी आयात के	अल्लाह के	बाद	बात के

يُصِرُّ	ثُمَّ	عَلَيْهِ	تُتْلٰى	اللّٰهِ	اٰيٰتِ	يَّسْمَعُ	اَثِيْمٍ (7) لا
वो इसरार करता है	फिर	उस पर	जो पढ़ी जाती हैं	अल्लाह की	आयात को	वो सुनता है	बहुत गुनाहगार के

اَلِيْمٍ (8)	بِعَذَابٍ	فَبَشِّرْهُ	يَسْمَعْهَا ج	لَّمْ	كَاَنْ	مُسْتَكْبِرًا
दर्दनाक की	अज़ाब	तो ख़ुशख़बरी दे दीजिए उसे	उसने सुना उन्हें	नहीं	गोया कि	तकब्बुर करते हुए

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اُولٰٓئِكَ	هُزُوًا ؕ	اتَّخَذَهَا	شَيۡـًٔا	مِنۡ اٰيٰتِنَا	عَلِمَ	وَاِذَا
यही लोग हैं	मज़ाक़	वो बना लेता है उसे	कोई चीज़	हमारी आयात में से	वो जान लेता है	और जब

يُغۡنِىۡ	وَلَا	جَهَنَّمُ ۚ	مِنۡ وَّرَآئِهِمۡ	مُّهِيۡنٌ (9)	عَذَابٌ	لَهُمۡ
काम आएगा	और ना	जहन्नम है	उनके आगे	ज़लील करने वाला	अज़ाब है	उनके लिए

اللّٰهِ	مِنۡ دُوۡنِ	اتَّخَذُوۡا	مَا	وَّلَا	شَيۡـًٔا	كَسَبُوۡا	مَّا	عَنۡهُمۡ
अल्लाह के	सिवाए	उन्होंने बना लिए	वो जो	और ना	कुछ भी	उन्होंने कमाया	जो	उन्हें

وَالَّذِيۡنَ	هُدًى ۚ	هٰذَا	عَظِيۡمٌ ؕ (10)	عَذَابٌ	وَلَهُمۡ	اَوۡلِيَآءَ ۚ
और वो जिन्होंने	हिदायत	ये है	बहुत बड़ा	अज़ाब है	और उनके लिए	हिमायती

ع 1 11 17

اَلِيۡمٌ (11) ع	مِّنۡ رِّجۡزٍ	عَذَابٌ	لَهُمۡ	رَبِّهِمۡ	بِاٰيٰتِ	كَفَرُوۡا
दर्दनाक	बदतरीन क़िस्म का	अज़ाब है	उनके लिए	अपने रब की	आयात का	इंकार किया

فِيۡهِ	الۡفُلۡكُ	لِتَجۡرِىَ	الۡبَحۡرَ	لَكُمُ	سَخَّرَ	الَّذِىۡ	اَللّٰهُ
उसमें	कश्तियां	ताकि चलें	समुन्दर को	तुम्हारे लिए	मुसख़्ख़र किया	वो है जिसने	अल्लाह

وَسَخَّرَ	تَشۡكُرُوۡنَ (12) ۚ	وَلَعَلَّكُمۡ	مِنۡ فَضۡلِهٖ	وَلِتَبۡتَغُوۡا	بِاَمۡرِهٖ
और उसने मुसख़्ख़र किया	तुम शुक्र अदा करो	और ताकि तुम	उसके फ़ज़्ल से	और ताकि तुम तलाश करो	उसके हुक्म से

اِنَّ	مِّنۡهُ ؕ	جَمِيۡعًا	فِى الۡاَرۡضِ	وَمَا	فِى السَّمٰوٰتِ	مَّا	لَكُمۡ
बेशक	अपनी तरफ़ से	सब का सब	ज़मीन में है	और जो कुछ	आसमानों में है	जो कुछ	तुम्हारे लिए

اٰمَنُوۡا	لِّلَّذِيۡنَ	قُلۡ	يَّتَفَكَّرُوۡنَ (13)	لِّقَوۡمٍ	لَاٰيٰتٍ	فِىۡ ذٰلِكَ
ईमान लाए	उन लोगों को जो	कह दीजिए	जो ग़ौरो फ़िक्र करते हैं	उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां हैं	इसमें

بِمَا	قَوۡمًا	لِيَجۡزِىَ	اَيَّامَ اللّٰهِ	لَا يَرۡجُوۡنَ	لِلَّذِيۡنَ	يَغۡفِرُوۡا
बवजह उसके जो	एक क़ौम को	ताकि वो बदला दे	अल्लाह के दिनों की	नहीं वो उम्मीद रखते	उनको जो	कि वो माफ़ कर दें

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَمَنْ	فَلِنَفْسِهٖ ج	صَالِحًا	عَمِلَ	مَنْ	يَكْسِبُوْنَ (14)	كَانُوْا
और जो	तो उसी के लिए है	नेक	अमल किया	जिसने	वो कमाई करते	थे वो

اٰتَيْنَا	وَلَقَدْ	تُرْجَعُوْنَ (15)	اِلٰى رَبِّكُمْ	ثُمَّ	فَعَلَيْهَا ؗ	اَسَآءَ
दी हमने	और अलबत्ता तहक़ीक़	तुम लौटाए जाओगे	अपने रब ही की तरफ़	फिर	तो उसी पर है	बुराई करता है

مِّنَ الطَّيِّبٰتِ	وَرَزَقْنٰهُمْ	وَالنُّبُوَّةَ	وَالْحُكْمَ	الْكِتٰبَ	بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
पाकीज़ा चीज़ों से	और रिज़्क़ दिया हमने उन्हें	और नुबूव्वत	और हुकूमत	किताब	बनी इस्राईल को

فَمَا	مِّنَ الْاَمْرِ ج	بَيِّنٰتٍ	وَاٰتَيْنٰهُمْ	عَلَى الْعٰلَمِيْنَ (16) ج	وَفَضَّلْنٰهُمْ
तो नहीं	(दीन के) मामले में	वाज़ेह निशानियाँ	और दीं हमने उन्हें	तमाम जहानों पर	और फ़ज़ीलत दी हमने उन्हें

بَيْنَهُمْ ط	بَغْيًا	الْعِلْمُ لا	جَآءَهُمُ	مَا	مِنْۢ بَعْدِ	اِلَّا	اخْتَلَفُوْٓا
आपस में	ज़िद की वजह से	इल्म	आया उनके पास	जो	बाद इसके	मगर	उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया

كَانُوْا	فِيْمَا	الْقِيٰمَةِ	يَوْمَ	بَيْنَهُمْ	يَقْضِيْ	رَبَّكَ	اِنَّ
थे वो	उसमें जो	क़यामत के	दिन	दर्मियान उनके	वो फ़ैसला करेगा	रब आपका	बेशक

مِّنَ الْاَمْرِ	عَلٰى شَرِيْعَةٍ	جَعَلْنٰكَ	ثُمَّ	يَخْتَلِفُوْنَ (17)	فِيْهِ
(दीन के) मामले में	वाज़ेह रास्ते पर	कर दिया हमने आपको	फिर	वो इख़्तिलाफ़ करते	जिसमें

اِنَّهُمْ	لَا يَعْلَمُوْنَ (18)	الَّذِيْنَ	اَهْوَآءَ	تَتَّبِعْ	وَلَا	فَاتَّبِعْهَا
बेशक वो	नहीं वो इल्म रखते	उन लोगों की जो	ख़्वाहिशात की	आप पैरवी कीजिए	और ना	पस पैरवी कीजिए उसकी

بَعْضُهُمْ	الظّٰلِمِيْنَ	وَاِنَّ	شَيْـًٔا ط	مِنَ اللّٰهِ	عَنْكَ	يُّغْنُوْا	لَنْ
बाज़ उनके	ज़ालिम लोग	और बेशक	कुछ भी	अल्लाह से	आप के	वो काम आऐंगे	हरगिज़ नहीं

لِلنَّاسِ	بَصَآئِرُ	هٰذَا	الْمُتَّقِيْنَ (19)	وَلِيُّ	وَاللّٰهُ	بَعْضٍ ج	اَوْلِيَآءُ
लोगों के लिए	बसीरत की बातें हैं	ये	मुत्तक़ी लोगों का	दोस्त है	और अल्लाह	बाज़ के	दोस्त हैं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الَّذِيْنَ	حَسِبَ	اَمْ	يُّوْقِنُوْنَ (20)	لِّقَوْمٍ	وَّرَحْمَةٌ	وَهُدًى
उन लोगों ने जिन्होंने	समझ रखा है	या	जो यक़ीन रखते हैं	उन लोगों के लिए	और रहमत है	और हिदायत

وَعَمِلُوا	اٰمَنُوْا	كَالَّذِيْنَ	نَّجْعَلَهُمْ	اَنْ	السَّيِّاٰتِ	اجْتَرَحُوا
और उन्होंने अमल किए	ईमान लाए	उन लोगों की तरह जो	हम कर देंगे उन्हें	कि	बुराईयों का	इर्तिकाब किया

ع 2 10 18

يَحْكُمُوْنَ ؑ (21)	مَا	سَآءَ	وَمَمَاتُهُمْ ؕ	مَّحْيَاهُمْ	سَوَآءً	الصّٰلِحٰتِ ۙ
वो फ़ैसला कर रहे हैं	जो	कितना बुरा है	और मरना उनका	जीना उनका	बराबर है	नेक

نَفْسٍ	كُلُّ	وَلِتُجْزٰى	بِالْحَقِّ	وَالْاَرْضَ	السَّمٰوٰتِ	اللّٰهُ	وَخَلَقَ
नफ़्स को	हर	और ताकि बदला दिया जाए	साथ हक़ के	और ज़मीन को	आसमानों	अल्लाह ने	और पैदा किया

اتَّخَذَ	مَنِ	اَفَرَءَيْتَ	لَا يُظْلَمُوْنَ (22)	وَهُمْ	كَسَبَتْ	بِمَا
बना लिया	उसे जिसने	क्या फिर देखा आपने	वो ज़ुल्म ना किए जाएंगे	और वो	उसने कमाई की	उसका जो

عَلٰى سَمْعِهٖ	وَّخَتَمَ	عَلٰى عِلْمٍ	اللّٰهُ	وَاَضَلَّهُ	هَوٰىهُ	اِلٰهَهٗ
उसके कान पर	और उसने मोहर लगा दी	इल्म के बावजूद	अल्लाह ने	और भटका दिया उसे	अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स को	इलाह अपना

مِنْۢ بَعْدِ	يَّهْدِيْهِ	فَمَنْ	غِشٰوَةً ؕ	عَلٰى بَصَرِهٖ	وَجَعَلَ	وَقَلْبِهٖ
बाद	हिदायत देगा उसे	तो कौन	एक पर्दा	उसकी आंख पर	और उसने डाल दिया	और उसके दिल पर

حَيَاتُنَا	اِلَّا	هِيَ	مَا	وَقَالُوْا	تَذَكَّرُوْنَ (23)	اَفَلَا	اللّٰهِ ؕ
ज़िंदगी हमारी	मगर	ये	नहीं है	और उन्होंने कहा	तुम नसीहत पकड़ते	क्या भला नहीं	अल्लाह के

وَمَا	الدَّهْرُ ۚ	اِلَّا	يُهْلِكُنَآ	وَمَا	وَنَحْيَا	نَمُوْتُ	الدُّنْيَا
और नहीं	ज़माना	मगर	हलाक करता हमें	और नहीं	और हम जीते हैं	हम मरते हैं	दुनिया की

وَاِذَا	يَظُنُّوْنَ (24)	اِلَّا	هُمْ	اِنْ	مِنْ عِلْمٍ ۚ	بِذٰلِكَ	لَهُمْ
और जब	वो गुमान करते	मगर	वो	नहीं हैं	कोई इल्म	उसका	उन्हें

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَنْ	اِلَّآ	حُجَّتَهُمْ	كَانَ	مَّا	بَيِّنٰتٍ	اٰيٰتُنَا	عَلَيْهِمْ	تُتْلٰى
ये कि	मगर	हुज्जत उनकी	होती	नहीं	वाज़ेह	आयात हमारी	उन पर	पढ़ी जाती हैं

اللّٰهُ	قُلِ	صٰدِقِيْنَ (25)	كُنْتُمْ	اِنْ	بِاٰبَآئِنَآ	ائْتُوْا	قَالُوْا
अल्लाह	कह दीजिए	सच्चे	हो तुम	अगर	हमारे आबा ओ अजदाद को	ले आओ	वो कहते हैं

الْقِيٰمَةِ	اِلٰى يَوْمِ	يَجْمَعُكُمْ	ثُمَّ	يُمِيْتُكُمْ	ثُمَّ	يُحْيِيْكُمْ
क़यामत के	तरफ़ दिन	वो जमा करेगा तुम्हें	फिर	वो मौत देता है तुम्हें	फिर	वो ज़िंदा करता है तुम्हें

مُلْكُ	وَلِلّٰهِ	لَا يَعْلَمُوْنَ (26) ع	النَّاسِ	اَكْثَرَ	وَلٰكِنَّ	فِيْهِ	لَا رَيْبَ
बादशाहत	और अल्लाह ही के लिए है	नहीं वो इल्म रखते	लोग	अक्सर	और लेकिन	जिसमें	नहीं कोई शक

ع 3 5 19

يَّخْسَرُ	يَوْمَئِذٍ	السَّاعَةُ	تَقُوْمُ	وَيَوْمَ	وَالْاَرْضِ ط	السَّمٰوٰتِ
ख़सारा पाएंगे	उस दिन	क़यामत	क़ायम होगी	और जिस दिन	और ज़मीन की	आसमानों

اُمَّةٍ	كُلُّ	جَاثِيَةً قف	اُمَّةٍ	كُلَّ	وَتَرٰى	الْمُبْطِلُوْنَ (27)
उम्मत	हर	घुटनों के बल गिरी हुई	उम्मत को	हर	और आप देखेंगे	बातिल परस्त

تَعْمَلُوْنَ (28)	كُنْتُمْ	مَا	تُجْزَوْنَ	اَلْيَوْمَ	اِلٰى كِتٰبِهَا ط	تُدْعٰى
तुम अमल करते	थे तुम	उसका जो	तुम बदला दिए जाओगे	आज के दिन	तरफ़ अपनी किताब के	बुलाई जाएगी

نَسْتَنْسِخُ	كُنَّا	اِنَّا	بِالْحَقِّ ط	عَلَيْكُمْ	يَنْطِقُ	كِتٰبُنَا	هٰذَا
हम लिखवाते	थे हम	बेशक हम	साथ हक़ के	तुम पर	जो बोलती है	किताब हमारी	ये है

الصّٰلِحٰتِ	وَعَمِلُوا	اٰمَنُوْا	الَّذِيْنَ	فَاَمَّا	تَعْمَلُوْنَ (29)	كُنْتُمْ	مَا
नेक	और उन्होंने अमल किए	ईमान लाए	वो जो	तो रहे	तुम अमल करते	थे तुम	जो

الْمُبِيْنُ (30)	الْفَوْزُ	هُوَ	ذٰلِكَ	فِيْ رَحْمَتِهٖ ط	رَبُّهُمْ	فَيُدْخِلُهُمْ
वाज़ेह	कामयाबी	वो ही	ये है	अपनी रहमत में	रब उनका	तो दाख़िल करेगा उन्हें

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلَيْكُمْ	تُتْلٰى	اٰيٰتِيْ	تَكُنْ	اَفَلَمْ	كَفَرُوْا قف	الَّذِيْنَ	وَ اَمَّا
तुम पर	वो पढ़ी जातीं	आयात मेरी	थीं	क्या फिर ना	कुफ़्र किया	वो जिन्होंने	और रहे

اِنَّ	قِيْلَ	وَ اِذَا	مُّجْرِمِيْنَ (31)	قَوْمًا	وَ كُنْتُمْ	فَاسْتَكْبَرْتُمْ
बेशक	कहा गया	और जब	मुजरिम	क़ौम	और थे तुम	तो तकब्बुर किया तुमने

مَّا	قُلْتُمْ	فِيْهَا	لَا رَيْبَ	وَّ السَّاعَةُ	حَقٌّ	اللّٰهِ	وَعْدَ
नहीं	कहा तुमने	उसमें	नहीं कोई शक	और क़यामत	सच्चा है	अल्लाह का	वादा

نَحْنُ	وَّمَا	ظَنًّا	اِلَّا	نَّظُنُّ	اِنْ	السَّاعَةُ ۙ	مَا	نَدْرِيْ
हम	और नहीं हैं	एक गुमान ही	मगर	हम समझते	नहीं	क़यामत	क्या है	हम जानते

وَحَاقَ	عَمِلُوْا	مَا	سَيِّاٰتُ	لَهُمْ	وَ بَدَا	بِمُسْتَيْقِنِيْنَ (32)
और घेर लेगा	उन्होंने अमल किए	उनकी जो	बुराईयां	उनके लिए	और ज़ाहिर हो जाएंगी	यक़ीन करने वाले

نَنْسٰىكُمْ	الْيَوْمَ	وَ قِيْلَ	يَسْتَهْزِءُوْنَ (33)	بِهٖ	كَانُوْا	مَّا	بِهِمْ
हम भुला देंगे तुम्हें	आज	और कह दिया जाएगा	वो मज़ाक़ उड़ाया करते	जिसका	थे वो	वो जो	उन्हें

وَمَا	النَّارُ	وَمَاْوٰىكُمُ	يَوْمِكُمْ هٰذَا	لِقَآءَ	نَسِيْتُمْ	كَمَا
और नहीं	आग है	और ठिकाना तुम्हारा	अपने इस दिन की	मुलाक़ात को	भुला दिया तुमने	जैसा कि

اٰيٰتِ	اتَّخَذْتُمْ	بِاَنَّكُمُ	ذٰلِكُمْ	مِّنْ نّٰصِرِيْنَ (34)	لَكُمْ
आयात को	बना लिया तुमने	बवजह इसके कि तुम	ये बात	मददगारों में से कोई	तुम्हारे लिए

لَا يُخْرَجُوْنَ	فَالْيَوْمَ	الدُّنْيَا ج	الْحَيٰوةُ	وَّ غَرَّتْكُمُ	هُزُوًا	اللّٰهِ
ना वो निकाले जाएंगे	तो आज	दुनिया की	ज़िंदगी ने	और धोखा दिया तुम्हें	मज़ाक़	अल्लाह की

رَبِّ	الْحَمْدُ	فَلِلّٰهِ	يُسْتَعْتَبُوْنَ (35)	هُمْ	وَلَا	مِنْهَا
जो रब है	सब तारीफ़	पस अल्लाह ही के लिए है	वो उज़्र क़ुबूल किए जाएंगे	वो	और ना	उससे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

السَّمٰوٰتِ	وَ رَبِّ	الْاَرْضِ	رَبِّ	الْعٰلَمِيْنَ (36)	وَ لَهُ
आसमानों का	और रब है	ज़मीन का	जो रब है	तमाम जहानों का	और उसी के लिए है

الْكِبْرِيَآءُ	فِي السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ص	وَهُوَ	الْعَزِيْزُ	الْحَكِيْمُ (37) ع
बड़ाई	आसमानों में	और ज़मीन में	और वो	बहुत ज़बरदस्त है	ख़ूब हिक्मत वाला है

ع 4 11 20

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION